प्राकृतिक क्षार की 2 गोली। (किसी भी बीमारी से छुटकारा पाएँ।)

आधुनिक खेती में किसान रासायनिक खाद और जहरीली दवा का उपयोग करते हैं, जो फसलों को ज़हरीली बनाता हैं। इन फसलों को खाने से लोगों को असाध्य बीमारी होती हैं। राहत पाने के लिए वे अपनी मेहनत की कमाई उपचार और दवाओं पर भरपूर खर्च करते हैं, लेकिन राहत नहीं मिलती। अंग क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और काटने पड़ते हैं, फिर भी वही तकलीफ़ रहती हैं। दुख की बात है कि बहुत से लोग असहनीय दर्द से बहुत कम उम्र में ही मरते हैं।

25 साल की उम्र में, मैं कई असाध्य बीमारियों से पीड़ित था और बहुत दर्द सहता था। कई डॉक्टरों ने मेरी मदद करने की कोशिश की, लेकिन सफलता न मिली मैं दर्द और निराश होकर जीवन समाप्त करने के बारे में सोचा, तब मैंने देखा कि डॉक्टर और अनगिनत लोग भी मेरी तरह घुटन भरी जिंदगी जी रहे हैं। मुझे सवाल हुआ, हर कोई इतने बीमार क्यों है? उपचार क्यों विफल होते हैं?

उत्तर खोजने और अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने, मैंने चिकित्सा पुस्तकों का अध्ययन शुरू किया। अपने शोध के माध्यम से, मैंने उन कारणों का पता लगाया कि हम राहत पाने में क्यों विफल होते हैं? और तब बीमारी पर काबू पाने का एक सरल तरीका खोजा और सभी बीमारी से राहत मिली। पिछले 40 वर्षों से मैं ***"पवित्र प्रसाद"*** *के रूप में मुफ्त गोली वितरित करके* ***'मानव सेवा'*** *कर रहा हूँ। इन गोली के उपयोग के 15 दिनों के भीतर, रोगियों को राहत महसूस होने लगती है और लोगों के आशीर्वाद मिलने लगे।*

रोग मुक्त जीवन जीने के लिए, सभी को यह समझना चाहिए कि बीमारी कैसे होती हैं और उनका इलाज कैसे करना चाहिए। एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन के लिए, धन भी महत्वपूर्ण है। ***हिंदू-जैन धर्म और हमारे श्री सावे ऑर्गेनिक फार्मिंग सिस्टम (OFS) के सिद्धांतों का पालन करके, 'प्राकृतिक चक्र में सहयोग करके' और केवल पानी सिंचाई करके, कोई भी 'करोड़पति बन सकता है।'*** *कैसे? वह जानकारी* ***'कुछ न करें और खूब कमाए'*** *विभाग में लिखी है।*

अब मैं 77 वर्ष का हो चुका हूँ, और 'ईश्वर' मुझे कभी भी वापस बुला सकता है। इस दुनिया से खाली हाथ जाने से पहले, यह मेरा नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है कि मैंने अपने जीवन-यापन के लिए समाज से जो कुछ भी लिया है, उसे ब्याज सहित समाज के चरणों में रखकर वापस कर रहा हूँ, ताकि अन्य लोग भी अपने जीवन-यापन के लिए इसका लाभ उठा सकें।

मैं डॉक्टर नहीं, *इसलिए अपनी और अपने सहयोगी दवा बनाने की कंपनी और अन्य मदद करता की सुरक्षा के लिए, मैं यह* ***'चेतावनी-अस्वीकरण'*** *लिख रहा हूँ। यदि आप मेरे 40 वर्षों के अनुभव पर भरोसा करते हैं तो ही अपने जोखिम से नीचे दी गई जानकारी पढ़कर* ***'प्राकृतिक क्षार की गोली'*** *का उपयोग करें और जो भी परिणाम हो,* ***इस के लिए कोई भी जिम्मेदार नहीं होगा।***

आपको यह जानने में रुचि होगी कि हमें बीमारियों से राहत क्यों नहीं मिलती? सच तो यह है कि अधिक लाभ और लालच में 'आधुनिक सिस्टम' के निर्माता भी आज घुटन भरी जिंदगी जी रहे हैं। एक बार सभी को सच्चाई पता चल जाए कि, 'हिंदू शास्त्रों में मनुष्य की आयु 1,000 वर्ष, 'बाइबल' में 600 वर्ष, क्यों लिखी है? और आज भी कुछ लोग 100 साल से अधिक निरोगी जीवन जीते हैं, तो फिर कुछ लोग 50 साल की छोटी उम्र में इस 'सुंदर दुनिया' को छोड़कर क्यों जा रहे हैं? और जो लोग लंबी उम्र जी रहे हैं, वे दवा कंपनियों के मालिक हों, दवा खोजकर्ता हों, डॉक्टर हों या सामान्य लोग हों, सभी को जीवन बसर करन दवा लेनी पड़ती हैं!! ***क्यों भाई क्यों सभी बीमार होते हैं? अब, हर कोई जानना चाहता है कि लंबा निरोगी जीवन कैसे जिया जाए। मैंने जो भी वैज्ञानिक कारण खोजे हैं, उन्हें मैं समाज के चरणों में रखता हूँ। उन पर विश्वास करना या न करना आप पर निर्भर है।***

मैं कई असाध्य बीमारियों से पीड़ित था और **'एलोपैथिक, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक दवाओं'** का उपयोग किया था, लेकिन मुझे केवल अस्थायी राहत मिलती। जब मैंने 200 साल पुरानी एक किताब पढ़ी और **'प्राकृतिक 12 नमक की गोली' को परहेज और अपने खुद के 'जैविक कृषि उत्पाद' का सेवन किया, तब मुझे निरोगी जीवन मिलने लगा।** इन चारो दवाओं के साथ मेरा अनुभव कुछ इस प्रकार है।

निरोगी जीवन के लिए, हमें यह समझना चाहिए कि बीमारियां होती हैं कैसे? शरीर को **'12 प्राकृतिक क्षार - नमक'** की आवश्यकता होती है, जिन्हें **'जैविक खेती'** की उपज के निरोगी भोजन से मिलता है। निरोगी भोजन से,

शरीर के विभिन्न अंगों द्वारा 12 क्षार चुसकर उन क्षार से **'वात** - गैस, **कफ** - सर्दी और **पित्त** - एसिड' यह तीन विकसित होते हैं, सही मात्रा से **'नया रक्त'** बनाता हैं, जिसे हर दिन हमें **'नई ऊर्जा'** मिलती है। अंगों द्वार आवश्यक क्षार चूस कर लेने के बाद वह भोजन का कचरा, शरीर उसे **मल, मूत्र, कफ और पसीने** के माध्यम से बाहर निकालता है।

शरीर अतिरिक्त और अशुद्ध भोजन को पचा नहीं पाता है, जो असल में कचरा है, इसलिए शरीर इसे दस्त, जुकाम, खांसी, नाक बहना, सिर दर्द या उल्टी के माध्यम से बाहर निकालता है। **कचरा शरीर के अंदर सड़ने से बीमारियां होती हैं,** कृमि कीड़े, बैक्टीरिया और कई कीटाणु पनपने लगते हैं और इसे बचने कभी-कभी तेज बुखार आता है, जिस गरमी के कारण कीटाणु मरते है और जुलाब - उल्टी द्वारा शरीर से कृमि बाहर निकालते है। **यह प्राकृतिक बुखार अपने आप आकर, शरीर का शुद्धकरण होने के बाद, बुखार अपने आप उतरता है।** लेकिन जुलाब, तेज बुखार और दर्द को देखकर, लोगों को मौत का डर लगता हैं और कई प्रकार की दवा लेकर राहत पाने शरीर में ही कचरे को दबाने देते हैं। जबकि पशु-पक्षी इस प्रकार बीमार होते हैं, तो वे राहत पाने भोजन का त्याग करते हैं, आंत को आराम देते हैं और उपवास के माध्यम से शरीर से कचरा निकलने देते हैं। इसी तरह, जैन साधु केवल गर्म पानी पीकर उपवास करते हैं और केवल घर का भोजन करके उसे पचाने हर जगह पैदल चलकर बीमारियों से बचते हैं।

आज तो आधुनिक युग है, हर कोई आधुनिक सुविधाएं चाहता है और उसकी पूर्ति के लिए किसी भी तरह से लोगों को अधिक से अधिक धन चाहिए साथी साथ, नौकरी छूटने के डर से, व्यापार बढ़ाने और खरिदार खोने के डर से, सभी लोग मशीन और पशु समान भरपूर परिश्रम करते हैं। समय बचाने के लिए वे जो भी आसानी से मिल जाए है वह कुछ भी खा लेते हैं। धन कमाने की इस भागदौड़ में किसी के पास न तो शरीर सफाई और ना ही ख्याल रखने का समय है। जब वे बीमार पड़ते हैं, तो वे तुरंत राहत पाने **'एलोपैथिक, होम्योपैथिक और आयुर्वेद दवा'** का उपयोग करते हैं। मैंने स्वयं, अपने परिवार के लिए और अपने मित्रों के लिए इन सभी दवा का उपयोग किया है। **मैं अपने सभी अनुभव आपको बता रहा हूँ, शायद यह बीमारी से जल्दी राहत पाने में उपयोगी हो और आप एक स्वस्थ जीवन जी सकें।**

शुरुआत में, एलोपैथिक दवा ने मुझे चमत्कारिक राहत दी। हालाँकि, समय के साथ, मेरी बीमारी बिगड़ती गई, मैंने बार-बार डॉक्टर के क्लिनिक में जाने लगा और इन यात्राओं के दौरान, मैं कई रोगियों की स्थिति देखकर हैरान रह गया। मैंने डॉक्टरों को रोगियों, विशेष रूप से रक्तचाप और मधुमेह वाले रोगियों से कहते हुए सुना, **"आपको अपने जीवन के बाकी समय के लिए दवा लेनी होगी; अन्यथा, आप मर सकते हैं।"** ***इससे मुझे आश्चर्य हुआ: यदि दवा और उपचार वास्तव में प्रभावी हैं, तो किसी को जीवन भर दवा क्यों लेनी चाहिए?***

मैंने इस बात को गहराई में जाकर अभ्यास किया और जाना कि, **ये दवाएं रासायनिक - आधारित होती हैं। इसे जानवरों पर लगाकर जांचते हैं, तैयार करते हैं और अक्सर पशु के अंग मानव के शरीर में प्रत्यारोपण भी करते हैं। आखिरकार, मुझे समझ में आया कि, कैसे ये दवाएँ तुरंत राहत देती हैं और क्यों उन्हें जीवन भर सेवन करना जरूरी है?** मैंने देखा की ज्यादातर बीमारी की शुरुआत सिरदर्द से होती हैं और तब दर्द को कम करने शरीर कई बार आंख और नाक से चिपचिपे बलगम और पानी के द्वारा कचरा को बाहर निकालता है। हालाँकि, त्वरित राहत के लिए, लोग टीवी पर पेश किए जाने वाले "दिमाग को चकरा देने वाले और मुफ़्त ज्ञान" से लोग प्रभावित होते हैं और विज्ञापन देख ने के बाद, **सभी सिरदर्द की गोलियां लेते हैं, जिससे बलगम का प्रवाह रुकता है और सिरदर्द थंब जाता हैं, लेकिन इससे एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है: वह निकल रहा कचरा कहां गायब हुआ?**

मेरे परिवार में रक्तचाप एक आम बीमारी है। डॉक्टर ने 5 mg की गोली से इलाज शुरू किया था मगर कुछ महीनों में खुराक **5 mg. से 250 mg. तक बढ़ गया**, तब मैंने डॉक्टर से यह बढ़ने के कारण पूछा और उन्होंने कहा,

"यह एक वायरल बीमारी है, और इससे बचने के लिए, जीवन भर दवा लेनी पडती है और बंद करते हैं, तो रक्तचाप बढ़ता है और मृत्यु भी हो सकता है।" इस तरह से गोली की मात्रा क्यों बढ़ रही है? उस पर मैंने अभ्यास शुरु किया।

गोली की mg. क्यों बढ़ रही है? सिरदर्द की गोली से तत्काल आराम को देखते हुए इस शोध ने सच उजागर कर दिया। इन गोलियों में अधिकांश रसायन गर्म प्रकृति के होते हैं और वे कचरे में मौजूद पानी को वाष्पित करता हैं और बलगम सुखाता हैं और सिरदर्द का कचरा शरीर में ही रहता है, इस बात का सबूत यह है कि जब नाक से बहने वाला चिपचिपा बलगम सूख जाता है तो लोग नाक खुजला कर उसे निकालते हैं, लेकिन सिर का सूखा कचरा शरीर के अंदर ही होता है, जो रक्त प्रवाह को रोकता है और इस कारण रक्तचाप कभी कम नहीं होता, बल्कि गोली का mg. समय के साथ बढ़ता है और जीवन बचाने के लिए जीवन भर गोली खानी पड़ती है।

मैंने अपने लोगों को बीमारियों से पीड़ित देखा है और हर तरह के उपचार करवाए हैं, इससे **मेरा अनुभव यह है** कि, **आपातकालीन स्थिति में 'एलोपैथिक सिस्टम' केवल पीड़ा दबाने के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि यह कभी भी शरीर को शुद्ध नहीं करती है। 'ब्लड प्रेशर'** के लिए डॉक्टर ने खून को पानी की तरह पतला रखने के लिए आजीवन दवा लेने की सलाह दी थी और इसके **'साइड-इफेक्ट'** के कारण मेरी दादी को **'खून की उल्टी'** होती थी और **मुझे अपनी लाइलाज बीमारी से राहत न मिलने के कारण आत्महत्या के विचार आते थे।**

अपने परिवार के इलाज में मैंने अपने डॉक्टरों से भी चर्चा की और मुझे पता चला कि, सिर से पैर तक **'आधुनिक सिस्टम'** केवल बीमारी के दर्द को दबाती है। **मेरा अनुभव है,** कोई भी बीमारी और चिपचिपा बलगम सूखा मल रक्त के साथ शरीर में यात्रा करता है और जहां चाहता है अंगों से चिपक जाता है। यदि यह आंखों से चिपकता है, तो वे लाल होती हैं, दृष्टि कमजोर होती है, चश्मे का नंबर बढ़ता है तथा अंत में **'मोतियाबिंद और अंधापन।'** जब यह कचरा कानों से चिपकता है, तो सुनने की क्षमता धीरे-धीरे कम होती है, तथा व्यक्ति **'बहरा'** होता है। यदि यह गले से चिपकता है, तो बच्चों को **'टॉन्सिल्स'** तथा वयस्कों को **'थायराइड'** की समस्या होती है। जब चिपचिपा कचरे की गांठ बनती हैं, तो यह रक्त को गाढ़ा कर देता हैं, जिससे व्यक्ति का तेज चलना मुश्किल होता है तथा अक्सर **'हृदय'** की समस्याएं, **'एसिडिटी'** के कारण छाती में जलन, **'अत्यधिक गैस बनना'**, अंगों का कमजोर होना तथा सभी कार्यों में गिरावट आती है। यदि कचरा किडनी या मूत्राशय में फंस जाए तो **'पथरी'** बनती है, रुक-रुक कर पेशाब आना **'प्रोस्टेट प्रॉब्लम'** है, ऐसे में जमा अपशिष्ट को निकालने के लिए मेरे बड़े भाई बार-बार डायलिसिस करते रहे और अंत में जब किडनी फेल हो गई तो उन्होंने भाभी की किडनी ट्रांसप्लांट करवा ली। शरीर के विभिन्न भागों में, विशेषकर महिलाओं के स्तनों में छोटी-छोटी गांठ - ट्यूमर बनते हैं और पर्याप्त दूध होने के बावजूद भी माँ स्तनपान नहीं कर पाती और इसी गांठ के कारण मेरी पत्नी के स्तन का ऑपरेशन हुआ और भाभी का पूरा **'स्तन निकाल दिया गया।'** सारे उपाय आजमाने के बाद मेरे चाचा के बेटे को **'कैंसर'** हो गया और कीमोथेरेपी के कारण उसके बाल झड़ गए और वह छोटी सी उम्र में ही मर गया, ठीक इसी तरह समय के साथ परिवार और रिश्तेदारों ने **'प्रकृति द्वारा मुफ्त दिए गए अंगों को निकालकर उनकी जगह कृत्रिम अंग लगा दिए।'** इन सभी **'साइड-इफेक्ट्स'** के बावजूद, मेरी सलाह है कि **आपातकालीन स्थितियों से बचें और यदि आपातकालीन स्थिति उत्पन्न हो जाए तो जीवन बचाने के लिए कुछ दिनों तक 'एलोपैथिक सिस्टम' का उपयोग करें।**

राहत पाने के लिए मैंने **'होम्योपैथी'** का भी सहारा लिया। मेरे डॉक्टर वाडिया ने मेरा पूरा पिछला मेडिकल

इतिहास पूछा। इस पद्धति में कई दवाइयों का उपयोग होता है और सभी के बारे में जानकारी होनी चाहिए, नहीं तो उनकी भी **'साइड-इफेक्ट्स'** होती हैं। **संक्षेप में कोई भी बीमारी एक रात नहीं आती और नाही पीछा छोड़ती, इसलिए राहत पाने के लिए धैर्य रखना चाहिए, जो आज की भागदौड़ भरी दुनिया में असंभव है।** मैंने दो साल तक इसका उपयगो किया, लेकिन कोई खास फायदा नहीं हुआ।

वैदराज - डॉक्टर को पेड़-पौधों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए, नहीं तो 'आयुर्वेद के भी साइड-इफेक्ट्स हैं।' कब्ज से राहत पाने के लिए एक विज्ञापन देखकर मैंने **'आयुर्वेद गोली'** ली। जब मैं गोली का सेवन करता, तो मेरा पेट साफ होता, लेकिन जिस दिन मैं गोली-चूर्ण नहीं लेता, अगले दिन शौच आसानी से नहीं हो पाता और मुझे सूखे मल को उंगली से निकालना पड़ता था। इससे मेरे मन में सवाल उठा कि, **'आयुर्वेद गोली' पेट कैसे साफ करती हैं?**

आयुर्वेद में पेट साफ करने के लिए कौन सा क्षार-लवण है, इस गोली या चूर्ण को कैसे लेना है और यह पेट कैसे साफ करता है? मैंने खोज की तो पता चला कि इन में **शरीर के लिए कोई भी उपयोगी क्षार नहीं होते,** फिर भी लोग एक हाथ में पानी और दूसरे में गोली या चूर्ण पकड़कर जबरदस्ती पेट में डाल देते हैं, **इससे आपातकालीन स्थिति पैदा होती है और शरीर की रक्षा हेतु प्राकृतिक सिस्टम के अनुसार गोली या चूर्ण को शरीर से बाहर फेंकना पड़ता है।** तो गलत दवा के साथ-साथ आंतों में फंसा हुआ मल-मूत्र बाहर निकल जाता है। **इससे अगले दिन कमजोरी आती है, क्योंकि इस शरीर शुद्धिकरण में बहुत से आरक्षित और आवश्यक पाचक रस और पानी भी बाहर निकल जाते हैं।**

क्यों कमजोरी आती है? **शरीर के वजन में 60% हिस्सा पानी का होता है और यह सभी अंग, मांसपेशी और रक्त को नम और मुलायम बनाए रखने में मदद करता है।** पेट साफ करने वाली गोली रोजाना खाने से पानी का भंडार कम हो जाता है और गोली के साथ-साथ सूखा मल और ज़रूरी पाचन रस भी कम हो जाते हैं। **इन गोली का सेवन सात दिन में एक बार करना चाहिए**, लेकिन इन्हें रोजाना खाने से पानी का भंडार कम होता है, खून गाढ़ा होता है, अंग और मांसपेशियां कमजोर और सूखी होती हैं और **'एलोपैथिक दवा' की तरह ही 'आयुर्वेद' के भी साइड इफेक्ट को देखों।**

सभी जानते हैं कि प्रकृति ने शरीर की सभी हड्डियां मांसपेशियों से जुड़ी हैं और उन्हें तार से बांध कर या धागे से सिलाई करके नहीं रखा।

लेकिन मैंने अपने परिवार में देखा है कि जब मांस का पानी सूख जाता है, तो वह कमजोर होकर टूटते हैं - फटते हैं और उसे तेज चलना या दौड़ना असंभव होता है, जब मेरे बड़े भाई की बांह की मांसपेशियां सूख गईं और बांहें बार-बार कंधे से बाहर आई और **'डिस्लोकेशन'** होने लगा, **उस समय डॉक्टर ने सभी मांसपेशियों को सील कर बांध दिया।**

जब गर्दन की मांसपेशियां सुखी, तो परिवार का वह सदस्य **'कुत्ते की तरह गर्दन की बेल्ट'** पहनकर चलता है।

मेरी रीढ़ की मांसपेशियां सूख गईं, मुझे **'स्लिप डिस्क'** हो गई और मेरी पीठ की नसें दबने लगीं, तो उसे रोकने और सहारा देने के लिए **मैंने लोहे की पट्टी वाली बेल्ट पहनना शुरू कर दिया।** वहीं मेरी बेटी की सास को असहनीय पीठ दर्द था, **दर्द से छुटकारा पाने और स्थायी राहत के लिए डॉक्टर ने सर्जरी की और सारी नसें ही काट दीं।** परिवार में कई लोगों की कमर की मांसपेशियां सूख गई हैं और उन्हें **'साइटिका'** और **'वैरिकोज वेन्स'** का दर्द हो रहा है।

'साइड-इफेक्ट्स' के कारण दिन-ब-दिन मेरी पत्नी की समस्या धीरे-धीरे बढ़ती गई, मांसपेशियां सूख गईं और पूरे शरीर का वजन घुटनों पर आ गया और जोड़ के ऊपर और नीचे की हड्डियां आपस में रगड़ खा रही थीं, जिससे उसे असहनीय दर्द हो रहा था, इसलिए हमने बहुत अधिक कीमत देकर सर्जरी करवाई और नए अप्राकृतिक जोड़ लगवाए, <u>लेकिन फिर भी दर्द वैसा ही बना हुआ है।</u>

तैयार भोजन और पानी को खराब होने से बचाने के लिए निर्माता **'एसिड-प्रिजर्वेटिव'** मिलाते हैं और हम सभी

ऐसे भोजन और पानी का सेवन करते हैं। ऐसे भोजन के कारण मेरे घर में छोटे-बड़े सभी का **'यूरिक एसिड'** बहुत बढ़ गया और सभी को **'गाउट और जोड़ों का दर्द'** से पीड़ित हैं, **बच्चे का पढ़ाई और खेलकूद में कोई मन नहीं लगता, घर में लड़के-लड़कियों की आंखों के नीचे कालापन और दांतों में कैविटी की समस्या है।**

मेरे **'गुरु'** की आंत में जब पानी सूख गया तो आंत की लंबाई बढ़ गई जिससे **'हर्निया'** हुआ और मेरे भाई को **'कब्ज'** थी, जोर से मल त्याग करने पर आंत की परत बाहर आती थी जिसे **'पाइल्स'** हुआ और इसे बाहर आने से रोकने के लिए **डॉक्टर ने उन्हें हमेशा के लिए टांके लगा दिए, तब से वे केवल ट्यूब पर बैठते हैं।** आंत कमजोर होने से पाचन तंत्र ठीक से काम नहीं करता और परिवार में **'मधुमेह और गैस'** की समस्या हैं और कई नई बीमारियां शुरू हो रही हैं।

मेरा ठोस मानना है कि, बीमारियां तब ही होती है जब शरीर में पानी की मात्रा 60% से कम होने लगे, बीमारी का नाम चाहे कुछ भी हो, ये स्थितियां अक्सर तीन तरह की दवाओं के 'साइड इफेक्ट' से होती हैं। महोदय, मैं बार बार कह रहा हुं मैं डॉक्टर नहीं, यह सारे मेरे अनुभव और बीमारी के लक्षणों को देखकर कह रहा हुं, इस पर विश्वास करो या न करो वह आप पर निर्भर है, मगर एक सच यह भी है कि, इन अनुभव से राहत पाने का मार्ग मुझे मिला, जो 'मानव सेवा' के लिए आपके चरणो में रखता हुं।

सच तो यह है कि दुनिया की सबसे पुरानी आयुर्वेदिक दवाएं इलाज के लिए बेहद कारगर हैं। हालाँकि, आज किसान खेती के लिए जहरीले इनपुट **(MFS)** पर निर्भर हैं, जिससे पौधों की शुद्ध भोजन देने की शक्ति कम हो गई है। **अगर पौधे शुद्ध पोषक तत्व नहीं दे सकते, तो आयुर्वेदिक दवाएँ कैसे प्रभावी ढंग से काम कर सकती हैं? स्वस्थ और तंदुरुस्त रहने के लिए हमें जैविक खेती से उगाए गए खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।**

'भारतीय आयुर्वेद उपचार की शक्ति और प्रमाण देखिए।' कई डॉक्टर तीसरे चरण के कैंसर के मरीजों को हमारे उमरागांव में भेजते थे। 1906 से हम 'श्री सावे पद्धति से जैविक खेती' करते हैं और हमारे भोजन में मानव शरीर के लिए आवश्यक सभी 12 क्षार होते हैं, इसलिए इलाज के लिए 'उमरागांव ट्रस्ट' ने हमारी उगाई हुई 'आयुर्वेद औषधियों' का उपयोग करते थे।

श्री साव जैविक कृषि सिस्टम से उग रही 'आयुर्वेद औषधियों' जो प्राकृतिक उपचार में उपयोगी है।

दस वर्षों तक, ट्रस्ट ने कैंसर रोगियों के लिए मुफ्त दवा दी और स्वस्थ रहने शुद्ध भोजन खाने और जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए हमारी जानकारी दी। ट्रस्ट ने तीसरे चरण के कई कैंसर ठीक किए, वह सभी रिकॉर्ड रखे थे और इस सफलता के आधार पर, **'गुजरात सरकार ने एक अस्पताल के लिए पांच एकड़ जमीन दी।' हालाँकि, ट्रस्ट ने देखा कि आधुनिक खेती के तरीके, दवा और गलत शिक्षा के कारण बीमारी बढ़ रही है और यही चलता रहा तो मुफ्त की सेवा कब तक दें पाएंगे? इस विचार से ट्रस्ट ने मुफ्त सेवा बंद कर दी और जमीन सरकार को वापस कर दी।**

एक कहावत है कि, **'दूध का जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है।'** सभी दवा के अनुभव मिलने के बाद राहत पाने मैंने एक सरल, प्राकृतिक सिस्टम की खोज शुरू की जिसे निरोगी जीवन बसर हो। **सभी धर्म कहता है कि**

'सच्चे दिल से प्रभु की खोज करो तो वह मिलते हैं।' और मेरे जीवन में यह बात सच हुई क्योंकि खोज रहा था एक और मिल गए दो, एक किसान और दूसरा डॉंकटर।

1960 में, निरोगी जीवन के लिए श्री सावे ने जैविक कृषि सिस्टम की खोज की जो अपना कर निरोगी जीवन बसर करने, प्राकृतिक चक्र की मदद से, शुद्ध उपज मिलती है और केवल पानी से खेती करके कोई भी धनवान बन सकता है। वह सारी सिस्टम की जानकारी 'कुछ न करें और खूब कमाएं।' विभाग में पढ़ो।

200 साल पहले सभी बीमारी में राहत पाने की प्राकृतिक उपचार सिस्टम की खोज जर्मन डॉक्टर श्री. शूस्लर ने की है, जो जानकारी आपके चरणो में मेरे अनुभव के साथ रख रहा हूं।

प्राकृतिक राहत पाने की खोज और सिस्टम।

200 साल पहले जर्मन डॉ. शूसलर ने 'प्राकृतिक चक्र और शारीरिक क्रिया' के बारे में अध्ययन किया और प्राकृतिक चक्र के नियमों के अनुसार उन्होंने जाना कि मानव शरीर '12 मुख्य क्षार - नमक' से बना है और फिर सिर से पांव तक कि सभी बीमारी से राहत पाने के लिए 'प्राकृतिक सरल उपचार प्रणाली' की खोज की।

अपनी खोज के बारे में डॉ. शूसलर ने बताया कि मानव शरीर पांच तत्वों - अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश से बना है और स्वस्थ जीवन के लिए जीवन 12 जैविक क्षार पर निर्भर करता है। जिस तरह जैविक खाद से पौधों को पोषण मिलता है, तो हमें स्वस्थ उपज मिलती है, उसी तरह मेरे द्वारा खोजे गए 12 क्षार लोगों को स्वस्थ बनाने और स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।

जब अनुचित खान-पान के कारण शरीर के क्षार असंतुलित होते हैं, तो कमजोरी आती है और हम इसे बीमारी मानते हैं। मैंने 12 क्षार की अधिकता या कमी के लक्षणों को पहचाना और 12 में से उचित क्षार की गोली देकर शरीर में क्षार को संतुलित किया। रोगी को तेजी से राहत मिलते देख मुझे लगा कि '12 प्राकृतिक क्षार की गोलियां' सभी बीमारियों और पुराने दर्द से पीड़ित लोगों को राहत देने में वरदान बन रही है।

बायोकैमिक गोलियों की स्वीकृति.

विश्व भर के कई डॉक्टरों ने डॉ. शूस्लर की 12 बायोकेमिकल गोली का उपयोग करके कहा, **'बीमारी में राहत पाने यह गोली उपयोगी है, यह पृथ्वी के मिलने क्षार से बनी है, इसे पशु पर परीक्षण की जरुरत नहीं, क्योंकि इन गोली का शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होता। ये गोलियाँ, उचित आहार के साथ मिलकर सिर से पैर तक आराम प्रदान कर सकती हैं, इन गोली का कोई साइड- इफेक्ट नही।'** यह सब बातें गूगल पर आप पढ़ सकते हैं।

मैं डॉक्टर नहीं और आपने अब तक मेरे अन्य दवा के अनुभव पढ़े हैं। मैं 12 गोली पर लिखी कई डॉक्टरों की किताबें पढ़ने के बाद, मेरी असाध्य बीमारी के लिए **'12 क्षार गोली'** लीं और बीमारी से राहत पाई, फिर परिवार को दी, सारे परिणाम देखकर, **पिछले 40 वर्षों से मुफ्त गोली देकर 'मानव सेवा' कर रहा हुं। आज मेरे पर विश्वास करने**

वाले लोग 15 दिनों के भीतर राहत पाने लगते हैं इस बात के आशीर्वाद के पत्र - वीडीयो हैं। अब में अपने खेतों के जैविक भोजन के माध्यम से ठीक हो रहा हुं, **100% राहत न मिलने के कई कारण मैंने अनुभव से जाने जो मैंने नीचे लिखे हैं।** मेरे जीवन का उद्देश्य है कि, **'सब को निरोगी जीवन मिले**, क्योंकि लालची लोग जीवन का सत्य भूल गए हैं कि, **'खाली हाथ आए थे खाली हाथ जाना है'**, इसलिए लूट ने के बजाय और धुट धुट के मरने से अच्छा है, **आनंद से निरोगी जीवन बसर करने के मार्ग पर चलें और हमारी कृषि सिस्टम में बिना लागत और नीति नियम से करोड़पति बने।'**

12 क्षार प्राकृती गोली को बढ़ावा देने में चुनौतियां हैं।

इन 12 गोली की खोज 200 साल पहले हुई थी लेकिन जानकारी के अभाव में और तुरंत राहत पाने के लिए सभी दूसरे **'उपचार'** अपना रहे हैं और मैंने उनके बारे में अपना अनुभव बताया है। जो लोग लंबे समय तक जीते हैं, वे दवाओं के सहारे जी रहे हैं, चाहे वे डॉक्टर हों या दवा कंपनी के मालिक, कई लोग अपने भाग्य को अपना दोष मानकर दुखी जीवन जीते हैं, **जब वे दर्द सहन नहीं कर पाते हैं, तो आत्महत्या कर लेते हैं।**

मेरी समझ से प्राकृतिक सफाई की सिस्टम।

अब समय आ गया है कि मेरी तरह '12 निर्दोष गोलियां' की पुस्तक पढ़ें, अपने परिवार के लिए डॉक्टर बनें और सभी बीमारी में राहत पाएं। मेरी एक ही विनती है, स्वस्थ और निरोगी जीवन पाने के लिए, शुद्धिकरण के लिए 15 दिन तक धैर्य रखें, क्योंकि कई वर्षों से दबा हुआ कचरा (पुराना खजाना) धीरे-धीरे बाहर आएगा, जो दस्त / बहती नाक / छाती से सूखे कफ के रूप में निकलता है और कफ के कई रंग होते हैं, बदबू भी होती है, उनका बाहर आना निरोगी बनने के लिए अति आवश्यक है, इस दौरान यदि आपको 'हल्का बुखार' होगा तो वह अधिक फायदेमंद होता है, क्योंकि बुखार की प्राकृतिक गर्मी के कारण जो भी सूक्ष्म कीटाणु कचरा खाकर जीवित रहते हैं और जिससे बीमारी होती हैं, वह इन गर्मी से दूर होते हैं।

जब मेरे शरीर से कचरा बाहर नहीं निकला तब मुझे **'दो बार टीबी हुआ'**, सूखी खांसी हुई और **'मैं कुत्ते की तरह भौंकता था'**, क्योंकि शरीर से कचरा बाहर निकालना चाहता था और **प्रकृति ने कचरे को पैर नहीं दिए जो खुद चलकर बाहर आ सके।** सूखे चिपचिपे कफ के कारण बहुत खुजली होती थी और मैं और अन्य लोग बंदर की तरह खुजलाते हैं, इसे त्वचा लाल होती है, कभी-कभी खून भी निकलता है, क्योंकि शरीर किसी भी तरह से कचरा बाहर निकालना चाहता है, लेकिन खुजली को रोकने के लिए हम **'क्रीम लगाकर खुजली को दबाते हैं',** अब वह चिपचिपा कफ सांस लेने वाले गुब्बारे की वायु मार्ग में चिपकता है और सांस लेने में कठिनाई होती है, दम घुटने लगता है तब **'अस्थमा पंप'** का उपयोग मेरे पड़ोसी करते थे, इसे कचरा अधिक सूखा और उसे **'खुजली रोग - एक्जिमा'** हुआ और सभी जानते हैं कि, **'एक्जिमा' की कोई दवा नहीं!!'** और अंत में **'त्वचा कैंसर'** से वह चल बसे। **'कोविड' में भी कुछ ऐसा ही होता है, मेरे पास प्रमाण है, मेरी छाती का एक्स-रे निकाला तब चिपचिपे कफ के कारण बिल्कुल काला आया था।**

प्रिय महोदय, भले ही आपने कोई भी ऑपरेशन करवाया हो या कोई 'अंग' निकाला हो, घबराइए नहीं क्योंकि मेरा 40 वर्ष के अनुभव और मुझे मिली राहत से कहता हुं, सिर से पैर तक की हर पीड़ा में यह मासूम 12 गोली की खोज उपयोगी है और सभी बीमारी में राहत देने में मदद करती हैं, पुराने सूखे चीप के हुए कचरे को पिघलाकर निकालती हैं, लंबे समय तक जीने का मार्ग तैयार होता है, बस धैर्य रखना पड़ता है, क्योंकि **'बीमारी एक रात में नहीं आई भाई'**, इसलिए कभी-कभी पुरानी बीमारियों में जमे हुए कचरे को निकालने में अधिक समय लगता है, पुरानी जम गई बीमारी फिर से दर्द देती है, बस इसलिए तो सभी कहते हैं कि, **'बीमारी 'हाथी' की गति से आती है और 'चींटी' की गति से जाती है।** एक बार कचरा निकल जाए तो आपको किसी भी बीमारी से राहत मिलती है।

घर में **'बायोकेमिकल 12 गोली'** की बोतल रखें और किसी भी **'होम्योपैथी फार्मेसी'** से खरीद लें, यह गाय के दूध के पाउडर (लैक्टोज - Lactose) से बनी है और 5 साल तक खराब नहीं होती, इसे चूसकर निगल लें और 15 मिनट तक पानी न पिएं। यह 12 गोली की बोतल आसानी से मिल सके इसलिए, मैंने बोतल पर अपने नंबर दिए हैं और बीमारी के लक्षण अनुसार, राहत के लिए मैं केवल बोतल का नंबर बताता हूं। **'गूगल'** पर ऐसी ही जानकारी कई डॉक्टरों ने दी है, मैंने भी वही अपनी किताब में लिखी है, कुछ जानकारी संक्षेप में नीचे दी है। **एक बात का ध्यान रखें कि, 12 महीनों में हम अलग-अलग सब्जियां और भोजन का उपयोग करते हैं और उस मौसम के अनुसार हमें अलग-अलग बीमारियां होती हैं, इसलिए इसे ध्यान में रखते हुए, उन महीनों के अनुसार ही रहें और गोली का उपयोग करें।**

'Biochemical 12 Tablets': 1. Calcarea Fluor- 6X. / 2. Calcarea Phos - 6X. / 3. Calcarea Sulph - 6X. / 4. Ferrum Phos - 6X. / 5. Kali Mur - 6X. / 6. Kali Phos - 6X. / 7. Kali Sulph - 6X. / 8. Magnesia Phos - 6X. / 9. Naturm Mur - 6X. / 10. Natrum Phos - 6X. / 11. Natrum Sulph - 6X. / 12. Silica - 6X.

'बायोकेमिकल 12 गोली': 1. कैल्केरिया फ्लोर- 6X. / 2. कैल्केरिया फॉस - 6X. / 3. कैल्केरिया सल्फ - 6X. / 4. फेरम फॉस - 6X. / 5. काली म्यूर - 6X. / 6. काली फॉस - 6X. / 7. काली सल्फ - 6X. / 8. मैग्नेशिया फॉस - 6X. / 9. नैचुरम म्यूर - 6X. / 10. नेट्रम फॉस - 6X. / 11. नेट्रम सल्फ - 6X. / 12. सिलिका - 6X.

जर्मन डॉक्टर श्री. शूस्लर के बाद विश्व के कई डॉक्टरों ने इन 12 गोली पर आगे खोज कि, जैसे की एक वर्ष में 12 महीने होते हैं, पृथ्वी के चारों ओर मुख्य 12 ग्रह हैं और मानव जन्म भी इसी 12 राशियों से संबंधित है। आप 'विश्वास करें या न करें', ये 12 गोली भी इसी गणना से संबंधित हैं। क्योंकि इससे मुझे मेरी बीमारी से वह राहत मिली, जिससे मैं 25 साल से पीड़ित था, आज भी मैं अपनी जन्मतिथि के अनुसार **200X पावर** की 5 छोटी गोली, हर 7 दिन में एक बार रात को लेता हूँ। **यह गोली हर किसी को फायदा क्यों नहीं करती?** क्योंकि अगर कोई अपने शरीर को कूड़ेदान समझकर कचरा डाले तो बताइए, उसे फायदा होगा कैसे? **नीचे मैंने वो जानकारी दी है जो डॉक्टरों की किताब में लिखी है।** इस महीने और इन तारीखों के बीच पैदा हुए पुरुष और महिलाएं उस बीमारी से पीड़ित हो सकती हैं, या भविष्य में होने की संभावना है और उसे रोकथाम के लिए यह गोली उपयोगी हो सकती है। मुझे लगता है निर्दोष गोली का उपयोग करने में कोई जोखिम नहीं, संपूर्ण पढ़ने से उपयोग करने में शायद विश्वास होगा, फिर भी जाँचें और उपयोग करें।

1) कैल्केरिया फ्लोर - 6X (21/06 से लेकर 20/07 बीच के जन्मदिन): दांतों के इनेमल मजबूत करना, हड्डियों और मांसपेशियों की लोच को मजबूत करता है। गांठ और ट्यूमर को घोलने में मदद करता है, हर्निया के दर्द से राहत देता है और वैरिकाज़ नसों से होने वाले पैर के दर्द मे राहत पाने उपयोगी है।

2) कैल्केरिया फॉस – 6X (21/12 से लेकर 29/01 बीच के जन्मदिन): मांसपेशियों को पुनर्स्थापित करता है, हड्डियों को मजबूत करता है, फ्रैक्चर को ठीक करता है, मूत्राशय की पथरी को घोलता है, पेशाब में मवाद को ठीक करता है, पाचन और गैस की शिकायतों में भरपूर उपयोगी है।

3) कैल्केरिया सल्फ – 6X (24/10 से लेकर 22/11 बीच के जन्मदिन): रक्त को शुद्ध करता है, संक्रमण को कम करता है, मुंहासे जैसी त्वचा संबंधी बीमारियों का इलाज करता है, तथा गले में खराश और सर्दी को रोकने में मदद करता है।

4) फेरम फॉस – 6X (19/02 से लेकर 20/03 बीच के जन्मदिन): सूजन और बुखार के लिए उत्तम, घावों को ठीक करता है, रक्तस्राव को रोकता है, मोटापा को कम करता है, रक्तचाप को कम करता है।

5) काली म्यूर – 6X (21/05 से लेकर 21/06 बीच के जन्मदिन): रक्त को शुद्ध करता है, गले के संक्रमण का इलाज करता है, सूजन को कम करता है, पाचन में सहायता करता है, आंत से मल - कचरा निकालने में मदद करता है।

6) काली फॉस – 6X (21/03 से लेकर 20/04 बीच के जन्मदिन): स्वास्थ्य, चिंता - डिप्रेशन, चिड़चिड़ापन और थकान दूर करने उत्तम, याददाश्त बढ़ाने, सिरदर्द से राहत पाने और नींद लाने में सर्वश्रेष्ठ है।

7) काली सल्फ – 6X (22/08 से लेकर 23/09 बीच के जन्मदिन): जुकाम में पीले-हरे रंग के बलगम के इलाज करता, श्लेष्म झिल्ली, त्वचा रोग के लिए उत्तम, पाचन को संतुलित करने और अग्नाशय के स्वास्थ्य में सुधार करता है।

8) मैग्नेशिया फॉस – 6X (21/07 से लेकर 21/08 बीच के जन्मदिन): ऐंठन, मांसपेशियों में दर्द, सिर दर्द और गैस के कारण पेट फूलना, इन सब में राहत पाने उपयोगी है।

9) नैट्रम म्यूर - 6X (20/01 से लेकर 18/02 बीच के जन्मदिन): शरीर में पानी भर जाने को संतुलित करना, हर अंग - मांसपेशी में पानी बनाए रखना, पाचन में सहायता करना, खाज - एक्जिमा जैसी त्वचा रोगों का इलाज करना, पानीदार कैंसर की गांठों को घोलने में मदद करता है।

10) नैट्रम फॉस - 6X (24/09 से लेकर 23/10 बीच के जन्मदिन): बार बार मुंह में खट्टा पानी आना, एसिडिटी, प्रवास में खट्टी उल्टी, जोड़ों के दर्द, गठिया, भोजन पाचन, बार बार डकार आना, छाती में गैस भरने से होने वाले असहनीय पीड़ा मे राहत देने में सर्वश्रेष्ठ है।

11) नैट्रम सल्फ - 6X (21/04 से लेकर 20/05 बीच के जन्मदिन): अग्न्याशय को साफ करना, स्वाद में कड़वाहट, गुर्दे की बीमारी को दूर करना, यकृत - लिवर के दर्द से राहत देता है और सर्दी, बुखार और फ्लू का इलाज करता है।

12) सिलिका – 6X (23/11 से लेकर 20/12 बीच के जन्मदिन): कैंसरग्रस्त गांठों को घोलने में मदद करता है, त्वचा और संयोजी ऊतकों को स्थिर करता है, रक्त को शुद्ध करता है, और बालों और नाखूनों को मजबूत बनाता है।

40 साल में मुफ्त के उपचार के बाद एक शंका जागी कि, सभी उपचार पद्धति ने अंग अनुसार बीमारी के अलग-अलग नाम और दवा भी बनाई है, अंगों के अनुसार कई डॉक्टर उपचार भी करते हैं। मान लीजिए किसी को सिरदर्द है और उस नाम से बिक रही गोली, क्या सिर्फ 'सिर दर्द पर ही कार्य और उपचार करेगी?

सभी उपचार सिस्टम में पानी के साथ दवा पेट में जाती है और फिर रक्त में घुल कर पूरे शरीर में घूम घूमते, सभी स्वस्थ अंगों को छू कर अंत में सर दर्द में राहत देती है और जब आपातकालीन स्थिति हो तो फौरन राहत देने डॉक्टर दवा का इंजेक्शन लगाते हैं। **अब तक इन सारे उपचार के मेरे अनुभव आप समझ गए हैं।** इससे एक और शंका उत्पन्न हुई, 'शरीर के अंग कट गए हैं, फिर भी लोग प्रतिदिन दवा खाते हैं इसे से कुछ मल, मूत्र और कफ के माध्यम से बाहर निकलते हैं, लेकिन काफी चिपचिपा कचरा बाहर आने की बजाय शरीर में दब ता है, **तो फिर वह कचरा कहां जमा होता है भाई !!?? जीस के दर्द से बचने सभी जीवन भर गोली खाते हैं।**

'मानव सेवा' करने से मुझे पता चला, **'यदि हम शरीर से सभी 'रक्त वाहिकाओं - शिराओं' को निकाल कर एक लाइन में जोड़ दें, तो उनकी लंबाई इस धरती के कम से कम दो वृत्तों के बराबर होगी। प्रकृति ने इतनी लंबी रक्त वाहिकाएं इसलिए दी हैं कि सभी अंगों को तुरंत रक्त मिले और इसका प्रमाण यह है कि, यदि शरीर में कहीं भी घाव हो, तो तुरंत रक्त बहने लगता है।** इस लम्बाई के कारण कचरा वहां दबकर रहता हैं और मरीज को पता भी नहीं चलता, इस कचरे के कारण कई लोग **'हाथी'** की तरह बढ़ते हैं, दिन-प्रतिदिन नई-नई बीमारियां पनपती हैं और जब हृदय को रक्त नहीं मिलता तो मेरी पत्नी के रक्त की नसों में **'धातु की नली - स्टेंट'** डाला गया है और मेरे अन्य कई लोगों का तो **'बाईपास'** किया है और अब रक्त को तेज से दौड़ाने, रक्त को पानी जैसा पतला रखने, नई दवा शुरू की है।

जब एक-एक करके मेरे, मेरी पत्नी और मेरे परिवार के अंग काम करना बंद करने लगे, तो जमा हुए कचरे को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए एक नया उपचार शुरू हुआ, जिसे हम 'फिजियोथेरेपी' के नाम से जानते हैं।

जीवन में सबसे पहली चीज जो मुझे करनी थी, वह मेरे जीवन के अंत में शुरू हुई, क्योंकि मैंने पैसा कमाने में समय बर्बाद किया, जो जीवन में मेरे साथ नहीं आने वाला था, ठीक वैसे ही जैसे कई 'करोड़पति' करते हैं। अब हम सभी को इन उपचारों का पूरा खर्चा एडवांस में देना पड़ता है और हमने जीवन में कभी साइकिल नहीं चलाई, हमने कभी मेहनत-मजदूरी नहीं की, लेकिन अब हमें वजन उठाना पड़ता है, जितना हो सके उतना व्यायाम करना पड़ता है और जब थक जाते हैं, तो मालिश करवानी पड़ती है। सर इसे कहते हैं 'कुछ न कमाओ, बस मेहनत करते रहो'। पुराना रह जाता है और नया कचरा बनता है और अंत में परिवार के सदस्य घुट-घुट कर मर जाते हैं।

सब कुछ नष्ट हो जाने के बाद सच्चाई सामने आती है और आखिर में वही डॉक्टर कहता है, **"मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की, लेकिन.....।"** अब मृत्यु प्रमाण पत्र और मृतक का शव लेने से पहले अस्पताल के बाकी बिल चुकाने होंगे। जब डॉक्टर अपने ही परिवार के सदस्यों को इस तरह मरते हुए देखता है, तो अक्सर उसे अफसोस होता है कि उसने 200 साल पुराने प्राकृतिक उपचारों पर भरोसा क्यों नहीं किया? बुजुर्गों की बात क्यों नहीं मानी? अगर 'प्रकृति चक्र' के अनुसार जीवन बसर करता तो धन और परिवार के सदस्य का जीवन दोनों बच सकते थे। **कई डॉक्टरों ने मेरी दो गोली से इलाज किया और स्वस्थ रहने निरगी भोजन पाने के लिए 'श्री सावे सिस्टम द्वारा जैविक खेती' कर रहे हैं।**

एक ठोस सत्य यह है कि, निरोगी सब को रहना हैं मगर उस के लिए शुद्ध भोजन पाने, केवल दाना बोने के काम कोई नही करते और MFS से उगाई जहरीली भोजन खाते हैं, आप क्या खा रहे हो आगे पढ़े। अब आप जैसे पढ़े लोगों से विनती है, देश को कृषिप्रधान बनाने और केवल पानी का उपयोग करके 'करोड़पति' बनना चाहते हो तो अन्य काम के साथ 'श्री सावे जैविक कृषि सिस्टम - OFS' को अपनाए जिस सिस्टम को कई 'राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार' मिल चुके हैं। 'विश्व के बेहतर भविष्य और ग्लोबल वार्मिंग से छुटकारा पाने के लिए हम 'सावे और संघवी' वह सारी जानकारी समाज के चरणों में 'कुछ न करें और खूब कमाएं' के अध्याय द्वारा रखा है।

डॉ. शूसलर की 12 क्षार की खोज और उसकी शक्ति।

'सिर से पैर तक, सभी बीमारियों के लिए' डॉ. शूसलर की 12 नमक की गोली की खोज अभूतपूर्व थी। ये गोली तुरंत लार में मिलती हैं, रक्त प्रवाह में प्रवेश करती हैं और सभी अंगों को छूकर शरीर में रोग पैदा करने वाले कचरा को साफ करके, रोग प्रतिरोधक बढ़ाकर लंबी आयु तक निरोगी जीवन बसर करने का वरदान मिलता हैं। यह कचरा दूर करती है इसका सबूत है मेरी बेटी 'कृपा' है, कचरा भरने से बेटी का वजन 103 किलो था, जो इन गोली से घट कर 70 किलो हो गया है, कई स्त्री की बीमारी से पीड़ित थी सब दूर होकर एक बेटे की मां बनी है। शुद्धिकरण के बाद एक वैज्ञानिक तरीके से अपनी मनचाही संतान पाने की जानकारी आगे पढ़े।

40 साल की मुफ्त सेवा से मुझे अनुभव मिला कि सभी अंगों में एक ही रक्त प्रवाहित होता है, इसलिए डॉ. शूसलर ने केवल 12 गोली बनाई हैं और इसे बीमारी के नाम से कोई संबंध नहीं है। जबकि आज हर बीमारी के लिए इतनी सारी दवाई क्यों हैं? सालों की पढ़ाई के बावजूद, डॉक्टरों को सारे शरीर की जानकारी क्यों नहीं होती? क्योंकि हर अंग के लिए हम अलग-अलग डॉक्टर के पास जाते हैं। यह मेरा अनुभव इस लिये लिखा क्योंकि खर्च करके भी परिवार के कई लोग मृत्यु के डर के कारण, रोजाना 20 से 40 गोली खाकर जीवन बसर कर रहे हैं, डायबिटीज के पीड़ित खाने से पहले पेट में रोजाना इंजेक्शन लगाते है। **वाह भाई वाह, क्या इलाज और सबकी अपनी सिस्टम है!!** संक्षेप

में शरीर आपका, बीमारी और दर्द आपको भुगतना है, इसलिए कौन से उपचार से आपको राहत पानी यह आपको ही सोचना है, **यह लिखने के पीछे कारण है, एक तो मैं डॉक्टर नहीं हूं और जब मेरे परिवार के कई लोग को मेरे उपचार पर भरोसा नहीं और अनेक गोली खाकर अपना जीवन घुट कर जी रहे,** इसलिए यह बात मैंने स्षट करदी है, आप को विश्वास हो तो ही गोली का उपयोग करें। फिर एक बार कहता हुं, **मैं डॉक्टर नहीं और यह मेरे अनुभव है।**

शुरू में शरीर शुद्धि के लिए मैं कई बोतलों से अनेक गोली देता था, मरीज बहुत सारी गोली खाते थे, मगर लेने में काफी गलती करते थे और बहुत सारी गोली देखकर कुछ मरीज तो मुझसे काफी नाराज भी होते थे। मरीजों की सुविधा के लिए और **सेवा के अनुभव से मैंने 12 गोली से कुछ जरुरी क्षार लेकर, उसे मिलाकर, सभी बीमारी में प्राथमिक शुद्धिकरण के लिए, एक दवा कंपनी से केवल 'A1 और A2 दो गोलियां' तैयार करवाई और उससे भी मेरे मरीज को 15 दिनों में आराम और मुझे सेवा के आशीर्वाद मिलने लगे और मानसिक तौर से बीमार का आत्मविश्वास बढ़ा की केवल दो गोली से वह ठीक हो रहे हैं। इस तरह 2 गोली तैयार करने से, पहले मेरा खर्च Rs. 3,000/- होता था, वह घटकर Rs.500/- हो गई, इससे मैं अधिक लोगों की सेवा कर पाया।**

मेरी उपचार पद्धति:

'मानव सेवा' के लिए 2 गोली देता तब राहत मिले इसलिए मैं कहता, यदि आप अपने शरीर को कूड़े का डिब्बा समझकर, तम्बाकू, सिगरेट, शराब का सेवन करते हो और जब 'ईश्वर ने मनुष्य को 100% शाकाहारी बना कर, पृथ्वी की सेवा हेतु खाली हाथ भेजकर, जीवन बसर के लिए अपना प्राकृतिक चक्र चलाकर, मुफ्त शुद्ध भोजन - पानी देता है, (कैसे मुफ्त देता है और शुद्ध मिलेगा ? वह जानकारी **'कुछ न करें और खूब कमाएं।'** विभाग में पढ़ें।) फिर भी प्रभु के काम में हस्तक्षेप करके, अपने पेट को कब्रिस्तान मानकर, 'मृत प्राणी के शरीर' को जला कर क्यों पेट में दफनाते हो? एक तो आप प्रकृति नियम **'मांसाहारी'** बनते हो और जो 'मांस-मछली-अंडे आदि' खाते हो तो उन जीव की सारी बीमारी आपको मिलती है (वह बीमारी क्या है? वह आगे लिखी है।) इस तरह पाप करके जो बीमारी होती हे, उस के उपचार के लिए कुछ भी लो राहत नहीं मिलती। जब राहत नहीं मिलती तब कई अशिक्षित लोग भाग्य को दोष देकर जानवरों की बलि देते हैं और राहत पाने के लिए पूजा-पाठ करते हैं, दान देते हैं, संक्षेप में 'ईश्वर' को रिश्वत देते हैं, लेकिन तब भी 'ईश्वर' उसे नहीं बचा सकते। **क्योंकि 'ईश्वर' ने '100% शाकाहारी' बनाया है तो वह मदद करेगा कैसे?**

यही नियम **'शुद्ध शाकाहारियों'** पर भी लागू होता है, क्योंकि वे भी रासायनिक खादों और जहरीली दवाओं से बना खाना खाते हैं। यही कारण है कि जैन मुनि, लोग, डॉक्टर यह सोचते हैं कि, वे स्वस्थ रहने के लिए शुद्ध भोजन खा रहे हैं, फिर भी उन्हें असाध्य रोग होते हैं और चाहे वे कोई भी दवा लें, उन्हें आराम नहीं मिलता और वे दम घुटने से मरते हैं। नीचे मैंने वे सभी वैज्ञानिक प्रमाण और कारण लिखे हैं, जो **हम 'प्राकृतिक चक्र' के विरुद्ध करते हैं और 'पर्यावरण' को बिगाड़ते हैं और 'ग्लोबल वार्मिंग' पैदा की हैं।**

'बायोकेमिक इम्युनिटी बूस्टर - A1 और A2 टैबलेट' कैसे लें, इसकी जानकारी।

आहार: 'योग' में इसे शरीर शुद्धि कहते है, जो मैं 40 वर्षों से यह करता हूँ, रोज़ाना सुबह ब्रश करने से पहले कम से कम एक से दो गिलास गुनगुना या सादा पानी पीता हूँ और फिर तुरंत 'सामान्य नमक' या 'विकोपेस्ट' से ब्रश करता हूँ।

शुद्धि के लिए यह संभव हो तो ही करें। ब्रश और जीभ साफ करने के बाद इस प्रक्रिया को करें। जितना हो सके उतनी जीभ को मुंह से बाहर निकाले और फिर तीन अंगुलियों से जीभ के अंदरूनी हिस्से को 3 से 4 बार रगड़ें, जहां आपको सूखा सफेद जमा हुआ बलगम मिलेगा, जहां जीभ साफ करने वाला तार नहीं पहुंच पाता। इससे अगर पेट में एसिड होग तो वह उल्टी से बाहर आ सकता है, अगर पानी का स्वाद खट्टा है तो **आंत कमजोर** है और अगर कड़वा है तो

यह **लिवर कमजोर** के लक्षण हैं। इस प्रक्रिया से गला और स्वरयंत्र साफ होता है, आंखों से थोड़ा पानी निकलता है, जो आपकी आंखों के प्राकृतिक लेंस को साफ करता है, दृष्टि साफ होती है और आप **मोतियाबिंद** से बच सकते हैं। सुबह पानी पीने से पेट भी साफ होता है और **कुछ ही दिनों में आंत और कब्ज की कई समस्याएं दूर हो जाती हैं।**

प्राकृतिक नियम के अनुसार, सुबह का नाश्ता राजा की तरह, दोपहर का भोजन अमीर की तरह और रात का खाना गरीब और भिखारी की तरह कम से कम खाना चाहिए। रात का खाना पचाने के लिए थोड़ी देर टहलना चाहिए ताकि अगर गैस हो तो डकार के साथ निकल जाए।

शाम 7 बजे के बाद आंत को आराम और भोजन पचने के लिए समय देना चाहिए, प्रकृति के इस नियम का पालन करने में कई पशु-पक्षी और जैन लोग पालन करते हैं। लेकिन उलु पक्षी और कई लोग प्राकृतिक नियम के विरुद्ध जीवन बसर करते हैं और इससे वात (गैस -वायु), पित्त (सभी प्रकार के एसिड जो स्वाद में खट्टा या कड़वा होता है) और कफ (सर्दी - खांसी) होता हैं, जब इन तीनों की मात्रा बढ़ती है या कम होती है तो बीमारी होती हैं। अगर आप समय से खाना खाकर इन तीनों तत्वों सही मात्रा में रखते हैं तो मेरी तरह आप भी 77 साल की उम्र में बीमारी से बच सकते हैं।

शरीर का सबसे मजबूत हिस्सा और चबाने की शक्ति दांतों में होती है, इसलिए इन्हें जीवन भर सुरक्षित रखने के लिए सोने से पहले इन्हें ब्रश करना जरूरी है। बीमारियों से बचने के लिए हर एक घंटे के बाद सादा या गुनगुना पानी पीने की आदत डालें, तो बीमारियों से बच सकते हैं।

कई सालों से हर तरह की बीमारी का कचरा शरीर में दबा हुआ है, जो 'प्राकृतिक गोली' की मदद से गलकर बाहर निकलने लगता है, जब यह बाहर निकलता है तो कुछ तकलीफ - दर्द जरूर हो सकता है, इसलिए बीमारी से छुटकारा पाने के लिए शरीर में नया कचरा न डालें और कचरे को निकालने के लिए 15 दिन तक **'बायोकेमिकल 2 गोली'** लें और शरीर को **'डिटॉक्स - शुद्धिकरण'** करने के लिए तला हुआ, जंक फूड, कॉफी, लहसुन, प्याज, मक्खन, पनीर, पिज़्ज़ा, चॉकलेट, अचार, इमली, कोल्ड ड्रिंक, आइसक्रीम, ठंडा पानी या बहुत ज्यादा खट्टा खाना (नींबू का इस्तेमाल जरूर करें) न खाएं और जैसा कि मैंने ऊपर कहा, 100% शाकाहारी होना जरूरी है।

‘A1 और A2 गोली लेने के समय:' नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने से 30 मिनट पहले ‘A1 की गोली’ लें। नाश्ते, दोपहर के भोजन और रात के खाने के 30 मिनट बाद ‘A2 की गोली’ लें।

'15 दिनों के बाद आहार संबंधी की जानकारी:' 15 दिनों के बाद, कॉफी और लहसुन, जो गोली को कार्य में रूकावट करते इसलिए वह छोड़कर सभी खाद्य पदार्थों को बारी-बारी से खा कर 3 तीन प्रतिक्षा करें, अगर आपको दर्द का अनुभव नहीं होता है, तो आप उस खाद्य पदार्थ को खाना जारी रख सकते हैं। अगर कोई खाद्य पदार्थ दर्द का कारण बनता है, तो उससे बचें, क्योंकि यह आपके शरीर के लिए अनुपयुक्त है। इस प्रक्रिया का उपयोग उन खाद्य पदार्थों की पहचान करने और उन्हें खत्म करने के लिए करें जो स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा कर सकते हैं। ऐसा करके, आप अपने स्वास्थ्य की जिम्मेदारी ले सकते हैं और रोग-मुक्त जीवन जी सकते हैं। इस तरह, खोज करके, खुद को बीमारी से बचाएं, यह स्वस्थ और निरोगी जीवन जीने और **अपने खुद के डॉक्टर बनने का सही तरीका है।**

महत्वपूर्ण जानकारी: अगर आप बीमारी या मौत के डर के कारण लंबे समय से कोई भी दवाएं ले रहे हैं, तो उन्हें अचानक बंद न करें। अपने डॉक्टर की सलाह के अनुसार उन्हें लेना जारी रखें। हालांकि, अपनी मौजूदा दवाओं और **A1** और **A2** गोली के बीच 30 मिनट का अंतर रखें। दोनो गोली के उपयोग करने के 15 दिनों के बाद, शायद आपको कुछ तो राहत मिली होगी जो आज तक नहीं मिली होगी इन बात की तुलना करें। यदि आपको **1%** भी सुधार का अनुभव नहीं हुआ, तो राहत पाने के लिए 12 गोली से कौन से नंबर से राहत मिलेगी? इस बात का अभ्यास कर ने **Google** पर पढ़े, क्योंकि

विश्व के कई दयावान डॉक्टरों ने वह जानकारी दी है, विस्तार में मेरी पुस्तक में लिखी है और कुछ संक्षेप में ऊपर लिखी है। एक बात ध्यान से सोचियेगा, भले आपको राहत न मिली हो मगर 'प्राकृतिक क्षार की 2 गोली' ने शरीर किसी भी अंग को कोई नुकसान तो नहीं पहुंचाया, यही वजह है कि उन्हें **'मासूम 12 गोलियां'** कहा जाता है। हालांकि, शरीर में पुराना कचरा साफ होने में समय भी तो लग सकता है, इसलिए धैर्य जरूरी है। भाई सच तो यह है कि, रातों-रात पुराना कचरा बाहर नहीं निकलने वाला, क्योंकि डर के मारे अन्य सिस्टम की गोली भी आप साथ साथ ले रहे हैं, इसके परिणाम क्या होंगे?

'प्राकृतिक 12 क्षार गोली' पर मेरा विश्वास क्यों बढ़ गया? मैंने अपने ही परिवार में देखा कि, शरीर के हर अंग का अध्ययन करने के बाद, मेरे परिवार के सदस्य **MS डॉक्टर बन गए**, उन्होंने मेरे असाध्य जोड़ों के दर्द की जांच के लिए, दूसरे एक डॉक्टर से पूरे शरीर की रिपोर्ट तैयार करवाई और उस आधार पर मेरे जोड़ों में कई **'स्टेरॉयड इंजेक्शन'** दिए, लेकिन कुछ दिनों के बाद वही दर्द फिर से शुरू होता था, फिर अती दर्द के कारण मुझे आत्महत्या करने का विचार आया, तब मैंने देखा कि, **भले ही वह मेरा पारिवारिक डॉक्टर है, लेकिन वह दूसरे डॉक्टर की रिपोर्ट देखने के बाद ही मेरे लिए दवाइयाँ लिखता है!! और मुझे स्वस्थ भोजन और आहार लेने की सलाह भी देता है, जब डॉक्टर को सारे शरीर की जानकारी है तो वह पहले अपना खुद का इलाज ठीक से क्यों नहीं कर सकते? आश्चर्य की बात तब हुई कि मेरे परिवार का वही डॉक्टर खुद ही 'प्रोस्टेट कैंसर' की असाध्य बीमारी से मर गया!!** इस मामले में, **'मानव जाति के लिए भगवान समान डॉक्टर का कोई दोष नहीं है भाई',** सच तो यह है कि, **हम सब विदेशी शिक्षा और उसकी व्यवस्था के माध्यम से लूट की योजना के शिकार हैं** और हजारों साल पुरानी **'आयुर्वेद उपचार पद्धति MFS Farming के कारण खत्म हो रही है।'** मैंने आयुर्वेद उपचार पद्धति के ठोस सबूत आगे लिखे हैं और बताया है कि वह मुफ्त इलाज क्यों बंद कर दिया? वह कारण भी बताए हैं।

जैन मुनि, लोग और डॉक्टर सभी बीमार होने का मुख्य कारण यह है कि, हम सभी को निरोगी जीवन बसर करने **'प्राकृतिक 12 शुद्ध क्षार' की आवश्यकता है और हमें आधुनिक खेती से केवल '3 NPK क्षार' मिलते हैं** जो MFS से तैयार किए होते हैं। ऐसी स्थिति में शरीर को बाकी **9 क्षार कहां से मिलेंगे?** यह एक योजना है, **'पहले दर्द दो और बाद में विटामिन की गोली दो'**, जीवन भर गोली खानी पड़ती हैं और बीमारी कभी ठीक नहीं होती और नाही राहत मिलती।

सभी धर्म कहते हैं, **'अच्छे कर्मों के कारण हमें आनंद से जीवन बसर करने मनुष्य जन्म मिलता है।'** क्या हम आनंद से जी रहे हैं? **नहीं साहब,** जहरीला भोजन खाकर हम जानवरों से भी बदतर जीवन जी रहे हैं और असाध्य रोगों से पीड़ित हैं, **'भाई, उस धन को कमाने का क्या फायदा जो स्वस्थ जीवन के लिए शुद्ध भोजन नहीं खरीद सकता?'** सभी को शुद्ध भोजन चाहिए लेकिन **OFS** कोई नहीं करना चाहता और ना ही नीति - नियम से करोड़पति बनना चाहता!!

जिस तरह से हम जी रहे हैं, हमारी नई पीढ़ी को कष्ट और पीड़ा न झेलनी पड़े, इसलिए उन्हें शिक्षा के माध्यम से 12 गोली और कृषि की सही जानकारी देना बहुत जरूरी है ताकि वे आनंद से जीवन जी सकें। अब हर व्यक्ति को 'आत्मनिर्भर' बनाने, उसकी मेहनत की कमाई को बचाने, सभी को पता होना चाहिए कि वे किस तरह का भोजन कर रहे हैं? **हम बार-बार कह रहे हैं, केवल पानी से घर, छत और खेत में 'जैविक खेती करो' और 'करोड़पति' बनो। इस बारे में भी हम अपनी 'श्री जैविक कृषि सिस्टम - OFS' के माध्यम से निःशुल्क जानकारी देकर सभी की मदद करते हैं। 'कुछ न करें और खूब कमाएं।'** में हमारी सिस्टम का अध्ययन करें। सभी बीमार कैसे होते हैं? रोग मुक्त जीवन कैसे पा सकते हैं? आपात स्थिति में, 'प्राकृतिक 12 क्षार गोली' से घर पर ही कैसे राहत मिलेगी? वह मेरे अनुभव से जानिए।

'प्राकृतिक नमक' के बारे में मेरा अनुभव आपने पढ़ा। अब ज़हरीला खाना खाने से बचने के लिए हमें यह तो पता होना ही चाहिए कि हम क्या खा रहे हैं? तब आप शरीर को शुद्ध कर सकेंगे और संतान प्राप्ति के लिए तैयार होगे,

यह जानना भी ज़रूरी है कि आजकल के माता-पिता किस तरह अपने बच्चों को **'किताबी कीड़ा'** बनाते हैं, उन्हें सिर्फ़ **नौकरी** (गुलामी) के लिए तैयार करते हैं और खुद अपना जीवन दुखों से भर देते हैं। अगर आपके बच्चे नहीं हैं तो भी खुशहाल जीवन जिएँ, **'माता-पिता'** और **'धनवान'** बनें, वह जानकारी **'कुछ न करें और खूब कमाएं'** में पढ़े।

200 साल पहले जर्मन डॉक्टर शुसलर ने **' प्राकृतिक 12 गोली'** का आविष्कार किया था और किताब पढ़कर मुझे लाभ मिला और **मैं डॉक्टर नहीं हूँ,** फिर भी 40 साल से लोगों की मदद करने के लिए मैं मुफ़्त गोली दे रहा हूँ ताकि उन्हें राहत मिले। इस अनुभव से मैंने सीखा है कि लोगों को राहत तो मिलती है, लेकिन सुबह के टूथपेस्ट से लेकर रात के खाने-पीने तक में केमिकल और एसिड-प्रिजर्वेटिव होते हैं और वही खाना सबको बीमार करता है, **तो फिर लाभ कैसे मिलेगा?**

आज **'मांसाहारियों'** के साथ साथ **'शाकाहारियों'** को भी कई बीमारी क्यों होती है? **'ईश्वर' ने मनुष्य को '100% शाकाहारी' बनाया है, जानवरों की तरह मनुष्य के पास लंबी जीभ, तीखे दांत, नाखून, लंबी आंत नहीं होतीं, फिर भी देखिये मनुष्य क्या खाता है।** एक प्राकृतिक और बहुरंगी स्वस्थ मुर्गी **350 दिन** में बड़ी होती है और वह बहुत तेज दौड़ती है, कृषि में फसल रक्षा किड़ो को खाती है और खुद का संसार बढ़ाने बहुत कम अंडे देती है। जहाँ वही ही आकार, वजन और पूरी तरह से 'सफेद' (कोढ़ की तरह दिखने वाले) 'ब्रॉयलर मुर्गे - मुर्गी' एक 'पोल्ट्री हाउस' में ढेर सारे रसायन खिलाकर मात्र **28 दिन** में बड़ी होती हैं और मशीन की तरह अंडे देना शुरू कर देती हैं। इस प्रकार के अप्राकृतिक रूप से तैयार की मुर्गे - मुर्गी न तो दौड़ सकते हैं और ना ही अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। **'आधुनिक कृषि - MFS'** में इसी प्रकार के रसायन और संकर बीजों का उपयोग किया जाता है, जो सब्जियों, फलों और अनाजों के आकार और वजन को बढ़ाते हैं। संक्षेप में, **'जैसा खाए अन्न वैसा बने तन, मन और विचार'।** आज लोग शरीर को **'कचरा पेटी'** समझते हैं और ऐसा जहरीला भोजन खाकर वे भी **'हाथी'** की तरह बड़े होते हैं। आज लोग जीने के लिए नहीं बल्कि स्वाद के लिए खाना खाते हैं, जिसके भोजन में जहरीले मसाले (अजीनोमोटो जैसे रसायन) होते हैं, **इसलिए आज के बच्चे चिड़चिड़े, क्रोध से भरे हुए, आंखों के नीचे काले घेरे, जोड़ों के दर्द, गैस, सर्दी, एसिडिटी और कई असाध्य रोगों से ग्रस्त हैं,** इसलिए इन सब से राहत पाने के लिए **A1 और A2 गोली** का उपयोग करें और अपने शरीर को शुद्ध करें

आपने अनुभव किया होगा कि आपकी चल रही दवा के साथ आपने प्राकृतिक गोली ली और आपको कम से कम 1% तो आराम मिला ही होगा जो आपको आज तक नहीं मिला था, अब सोचिए जब 15 दिन में कुछ आराम मिला है तो 90 दिन में कितना मिल सकता है? मेरी तरह अध्ययन करें और पूरे परिवार को स्वस्थ बना सकते हैं। भले ही आप गलत नंबर की गोली लें, लेकिन डरने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि इन गोलियों का कोई **'साइड-इफेक्ट'** नहीं और ये प्राकृतिक क्षार की गोलियाँ दूध के पाउडर से बनी हैं और इसीलिए यह होम्योपैथिक की दुकानों में आसानी से मिलती हैं।

अब तक आप समझ गए होंगे कि प्राकृतिक गोली के क्षार रक्त में मिलकर शरीर का शुद्धिकरण करता है, चिपका हुआ करचा कफ, मल, मूत्र, पसीना, उल्टी के माध्यम से बाहर निकलता है और इस सफाई में कोई कमजोरी नहीं होती। मेरे परिवार के कई लोगों की सुनने की शक्ति और अस्थमा पंप बंद हुआ। पुरानी बीमारी में काफी समय लगता है और अस्थमा - कोविड जैसे मरीजों को तो बहुत तेज खांसी आती है, आंखों से आंसू आते हैं और पुराना सफेद, पीला और हरा बदबूदार बलगम निकलता है **जो बाहर आना बहुत जरूरी है, तभी तो राहत मिलती है।** अगर बहुत तेज खांसी है तो छाती से कफ निकालने के लिए गर्म पानी में नींबू, मिसरी (सकर) और थोड़ा काला नमक डालकर पिएं जिससे छाती में जमा बलगम निकालने में मदद मिलती है। अगर बुखार आया तो कचरा पर जीवन बसर करने कीटाणु शरीर की गर्मी से दूर होते हैं। गोली से 15 दिन में राहत मिलनी शुरु होती है और याद रखें कि **'कोई भी बीमारी एक दिन में नाही आती और नाही जाती है।'** अगर शरीर में ज्यादा कचरा होगा तो कुछ दिन ज्यादा परेशानी हो सकती है लेकिन सफलता

जरूर मिलती है। जिन लोगों को जोड़ों का दर्द, अस्थमा और पुरानी सर्दी-खांसी है, उनके मुंह और नाक से कम से कम 90 दिन तक तो कफ निकलता है और मुझे तो आज भी कभी कभी निकलता है।

जो मरीज चल रही दवाइयों के साथ-साथ प्राकृतिक गोलियां भी लेते हैं, उस समय जब वे अपने शरीर से कचरा निकलते हुए देखते हैं, तो ऐसे मरीज इस कचरे को देखकर डर जाते हैं और सोचते हैं कि बीमारी बढ़ गई है और वे मासूम नमक की गोली लेना बंद करते हैं। **जैसा कि मैंने कहा कि, हर किसी को अपने कर्मों के अनुसार सजा भुगतनी पड़ती है, इसलिए जो लोग नहीं मानते उन्हें समझाने में समय बर्बाद न करें, उन्हें उनके भाग्य पर छोड़ दें।**

किसी को पीड़ित देखकर मैं सेवा करने का एक प्रयास जरुर करता हूँ। जिन्हें मृत्यु का बहुत डर है वैसे अक्सर शिक्षित **(पर शरीर के बारे में अनपढ़, जिन्हें हर बात में वैज्ञानिक प्रमाण मांगने की आदत होती है।)** उनसे मैं पूछता हूँ, **'200 वर्षों में कई डॉक्टरों ने 'प्राकृतिक 12 गोली'** पर कई किताबें लिखी हैं, कई ने मुफ्त सलाह दी है, बहुत सरल जीवन प्रणाली बनाई है, राहत पाने और बीमारी को ठीक करने का तरीका बताया है, लेकिन आपके पास शरीर को शुद्ध करने या किताबें पढ़ने का समय नहीं है, **इसलिए खुद ही देखें लो, क्या हालत है आपकी?**' अतः मृत्यु के भय को दूर करने के लिए मेरा एक प्रश्न है, **'रात को जब आप गहरी नींद में होते हैं, तो आप शरीर में नहीं होते, बल्कि आप स्वप्न लोक की दुनिया में होते हैं, जिसे शास्त्र मृत्यु की अवस्था कहते हैं, क्योंकि उस समय आपको नहीं पता होता कि आपके पास कितनी जमीन, संपत्ति और धन है, यदि आप देखें, तो उस समय आप सभी चिंताओं से मुक्त होते हैं। सत्य तो यह है कि, 'ईश्वर हर सुबह फिर से नया जीवन देता है ताकि आप जीवन का आनंद ले सकें' इसलिए अपने मन से मृत्यु का भय निकाल दें।** अब से अधिक से अधिक धन पाने के बारे में न सोचें, क्योंकि ठोस सबूत यह है कि एक दिन आपको यह सब छोड़ना ही है, इसलिए 'ईमानदारी' से स्वस्थ जीवन पाने के बारे में सोचें, क्योंकि जानवर भी अपना जीवन जीते हैं लेकिन हमें अपने अच्छे कर्मों के कारण मानव जीवन मिला है और स्वस्थ जीवन ही वास्तविक धन है। दूसरा सत्य यह है कि, शरीर से निकलने वाला यह मल, मूत्र और बलगम कोई **'सोना या चांदी'** नहीं है जिसे आप शरीर में रखना चाहते हैं !! चूँकि यह गंदगी बाहर नहीं निकलती, इसलिए शरीर के अंग पर कचरा चिपकता है, वह कटता है और ऐसे अंगों को पाने के लिए निर्दोष जानवरों को मारकर, दूसरे के शरीर से चुराकर या लेकर, प्रत्यारोपित किया जाता है।

'वाह भाई वाह' कितनी सुंदर 'आधुनिक विज्ञान, कार्य पद्धति और उपचार है!!' लेकिन भाई, इतने उपचारों के बाद भी वह पुराना 'कचरा' शरीर में ही तो रहेता हैं और मेरे परिवार के लोग जिसे मेरी तैयार की 2 गोली में विश्वास नहीं, वह सभी आज भी वही पुराना 'दर्द' भोगत रहे हैं।'

बेहतर है कि 2 गोली 15 दिन लेकर देखें और 1% भी आराम न मिले तो लेना बंद कर दें और ऊपर दी गई लिस्ट में से या गूगल से पढ़कर सही गोली लें। क्योंकि पूरी जिंदगी जहरीली दवा खाने से बेहतर है कि 2 गोली खाकर स्वस्थ जीवन जिया जाए।

200 साल पहले डॉ. शुस्लर ने कहा था कि, हमें पेड़ - पौधों की निरोगी उपज से प्राकृतिक 12 क्षार मिल ते हैं। मैंने श्री सावे जैविक कृषि - OSF से खेती की है और मेरा अनुभव है कि ये क्षार हमारे रोजाना के खाने और मसालों में मौजूद होते हैं और ये 12 क्षार की गोली के क्षार भी उसी प्रकार के होते हैं।

शरीर चेकअप के रिपोर्ट अंग्रेजी में लिखे होते हैं, आम लोग नहीं समझ पाते और वह देखकर, कोई लाइलाज बीमारी है समझ कर घुटन भरी जिंदगी जीता है। अरे भाई, जब प्रकृति ने शरीर को सिर्फ 12 क्षार से बनाया है तो सरल भाषा में लिखो कि, **शरीर में चूना कम है इसलिए हड्डियां कमजोर हैं इसलिए दूध में थोड़ा चूना मिलाओ, आयरन कम है तो सब्जियाँ ज्यादा खाओ, पानी कम होने से खून गाढ़ा है इसलिए पानी ज्यादा पियो आदि। 12 गोली और रोज**

खान में उपयोग कर रहे मसालों को समझते हैं। आइये इसे सरल तरीके से समझते हैं।

<u>जीवन की सुरक्षा के लिए और जब हम बीमार होते हैं तो हम क्या करते हैं?</u>

हम पके हुए फल और सूखे मेवे सीधे खाते हैं, लेकिन अनाज और सब्जियां खाने से पहले हम उन्हें पानी से अच्छी तरह से धोते हैं और **'MFS Side-Effects'** द्वारा उत्पादित रसायनों को हटाने के लिए चीपकी हुई धूल और किसी भी कचरे को हटाते हैं और अधिक सुरक्षा के लिए हम उन्हें पकाते हैं। **सच्चाई यह है कि खाना पकाने की यह प्रक्रिया केवल 'मनुष्य' ही करता है, <u>12 प्राकृतिक क्षारों में से अधिकांश जल जाते हैं</u> और उनकी भरपाई के लिए हम कई मसालों का उपयोग करते हैं, <u>क्या वे शुद्ध हैं? केवल भगवान ही जानता है!!</u>**

अब **'हल्दी'** को ही देख लीजिए, हर महिला जानती है कि अगर सब्जी काटते समय उसकी उंगली चाकू से कट जाती है, तो वह तुरंत **'हल्दी' का उपयोग करती है, क्योंकि 'हल्दी एक एंटीसेप्टिक है'**, इसलिए हल्दी डालकर सभी लोग गर्म दूध पीते हैं। सच तो यह है कि सभी भाषाओं में लोग **'हल्दी'** को अलग-अलग नामों से जानते हैं। हिन्दी में इसे **'हल्दी'** कहते हैं, अंग्रेजी में इसे **'टर्मेरिक - Turmeric'** कहते हैं और **हमारे प्रिय डॉक्टर शुस्लर ने इसका नाम 'फेरम फॉस - Ferrum Phos यानि नंबर 4 की गोली' रखा है,** जो एंटीसेप्टिक का काम करती है। इसी तरह जब बच्चा पेट दर्द और गैस की वजह से बहुत रोता है तो महिलाएं **'हींग'** को पानी में घोलकर पेट पर लगाती हैं जिससे गैस निकल जाती है। इसलिए हिन्दी में इसे **'हिंग'** कहते हैं, अंग्रेजी में इसे **'एसाफोटिडा - Asafoetida'** कहते हैं और **डॉक्टर शुस्लर ने इसका नाम 'मैग्नेशिया फॉस' रखा है जिसका मतलब है 'गोली नंबर 8',** जिसका इस्तेमाल गैस की वजह से होने वाले दर्द से राहत पाने के लिए किया जाता है। **'नमक'** का इस्तेमाल शरीर के पानी के संतुलन रखने उपयोग किया जाता है और **शुद्ध नमक - लवण - साल्ट** के लिए जिसके लिए **डॉक्टर शुस्लर ने इसका नाम 'नेट. म्यूर - Nat. Mur' रखा है - जिसका मतलब है नंबर 9'। मेरा अनुभव है कि हम प्रतिदिन जिसे 'शुद्ध मसाला' समझ कर उपयोग कर रहे हैं, वे 12 क्षार - नमक जमीन से निकाले हुए हैं क्षार है जिसे वैज्ञानिक तरह शुद्ध करके 12 गोली तैयार होती हैं, इसलिए हमारे शरीर की सुरक्षा और बीमारी से बचने के लिए, हर दिन इन गोलियों का उपयोग करने में कोई हानि नहीं है और मैं इसका उपयोग 40 साल से कर रहा हूँ और 77 वर्ष में भी निरोगी हूं।**

पुराने समय में शुद्ध मसाले प्राप्त करने के लिए महिलाएं **'जैविक खेती'** के माध्यम से उगाए गए ताजे मसालों का उपयोग करती थीं, उन्हें धूप में सुखा कर जब जरुरत हो तब पीसकर उपयोग करती थीं। लेकिन भाई, अब तो **'आधुनिक युग'** है और अधिक धन पाने के लिए किसी के पास इतनी लंबी प्रक्रिया करने का समय ही नहीं, इसलिए हर कोई रेडीमेड, बाजार में विकसित मसालों का उपयोग करते हैं और इसके सारे परिणाम हमारी आँखों के सामने हैं।

हमारी **'हिंदू संस्कृति'** में शरीर के लिए आवश्यक 12 क्षार हमें मसालों से मिलते हैं, अब इसे प्राप्त करने की दूसरी सिसटम देखते हैं। भारत में लोग खाना पकाने के लिए **'गाय का घी, मूंगफली, नारियल और सरसों का तेल'** का इस्तेमाल करते हैं। **'नारियल में सभी 12 प्राकृतिक क्षार - नमक होते हैं'**, **इसलिए हर पवित्र काम में नारियल का इस्तेमाल किया जाता है, और खाने में लोग नारियल का सबसे ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं,** इसे तैयार भोजन को सुंदर और सजाने के लिए छिड़का जाता है और चटनी के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

'हिन्दू पूजा' में भगवान गणेश के स्थान पर लोग सुपारी रखते हैं। **'विष्णु समाज'** में भगवान कृष्ण को प्रसाद के रूप में पका हुआ भोजन चढ़ाते है, साथ ही एक पत्ता, कत्था, भुनी हुई सुपारी और सभी को लौंग से बांधकर, सुंदर ढंग से सजाकर, नारियल का बुरादा छिड़ककर प्रसाद के रूप में रखते हैं और भोजन समाप्त होने के बाद सभी लोग उसी

सजाए हुए पान को भगवान का प्रसाद मानकर खाते हैं। इसके पीछे मुख्य वैज्ञानिक कारण यह है कि भुनी हुई सुपारी में रक्त को पतला रखने का गुण होता है और चूने में कैल्शियम होता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है। **'मुसलमान'** लोग भोजन के आरंभ और अंत में **'बिस्मिल्लाह'** कहकर थोड़ा नमक खाते हैं, यह प्रणाली भी भोजन को पचाने में उपयोगी होती है और वे भोजन के बाद सुपारी के साथ ऐसा ही पत्ता भी खाते हैं। **आज के आधुनिक युग में गुटखा, तंबाकू और कत्था चूर्ण की जगह 'कॉपर ऑक्साइड रसायन' ने लीया है और इसके सारे दुष्प्रभाव हमारी आंखों के सामने हैं।**

हर क्षेत्र का वातावरण, मौसम, भोजन और संस्कृति सभी अलग-अलग होते हैं और इस 'प्राकृतिक सिस्टम' द्वारा पौधे प्राकृतिक खाद लेते हैं और 12 क्षार वाला भोजन का उत्पादन करते हैं ताकि उस देश के लोगों का जीवन स्वस्थ हो और वे उस मौसम के अनुसार भोजन और अनाज खा सकें।

लेकिन आज विदेशी संस्कृति को अपनाकर दुनिया के सभी देश अपनी जीवन पद्धति भूल गए हैं और मौसम के अनुसार भोजन न करके बेमौसम भोजन खा रहे हैं जिसमें **'प्रिजर्वेटिव एसिड'** होता है, **जैसे आम का जूस और कई अन्य चीजें जो कम से कम एक से दो साल पुराने होते हैं।** कई देश खेती में दूसरे देशों के बीजों का इस्तेमाल कर रहे हैं और उन्हें उगाने के लिए अधिकतम **'MFS के रासायनिक खाद और कीटनाशक'** का इस्तेमाल कर रहे हैं, **जिससे कई बीमारियां भी पैदा हुई हैं, इसका सबूत देखिए।**

भारत में बाजरा, चावल और कई तरह के धान होते थे, जिन्हें खाकर लोग लंबी उम्र जीते थे और भारत दुनिया का सबसे अच्छा खेती वाला देश था, उसमें अंग्रेज गेहूं के बीज लेकर आए और भारत बर्बाद हो गया और इसका ठोस सबूत देखिए 'पंजाब' है, आज हर घर में 'कैंसर' है !! क्यों? क्योंकि **'ऑर्गेनिक खेती सिस्टम - OFS'** से हमें 12 स्वास्थ्यवर्धक नमक मिलते थे और अब MFS से हमें 3 जहरीले नमक मिलते हैं जिससे 100 की उम्र घटकर 50 रह गई है!! **आज 'भारत' के दुनिया के सबसे अच्छे किसान आत्महत्या कर रहे हैं, 'पर्यावरण' खराब है, ताजी हवा नहीं मिलती, सारे 'खाद्य-जल' में रसायन हैं और दवाई खाकर कोई व्यक्ति कितने दिन तक जीवित रह सकता है?**

यह 12 गोली की खोज मेरी नहीं है, पर मेरा निवेदन है कि 2 गोली लेकर देखें और अनुभव प्राप्त करें और यदि 15 दिन में 1% भी आराम न मिले तो रुक जाएं और आराम के लिए ऊपर से या **गूगल** से पढ़ें। 12 महीने और जन्मतिथि के अनुसार गोली के नंबर दिए हैं, संभव है उस मौसम में वह रोग हो जाए, अतः आराम के लिए उस नंबर की 6X गोली लें और अनुभव प्राप्त करें। 90 दिन के बाद आराम के आधार पर गोली कम करें। **मेरा दूसरा अनुभव है कि हिन्दू संस्कृति के अनुसार कचरा जमा होने से पहले हर 7 दिन में पेट साफ रखकर उसे निकाल देना चाहिए, इसलिए 'आयुर्वेदिक चूर्ण या गोली' लें। जिन लोगों को OFS खाना नहीं मिलता, जिसे श्रद्धा हैं, वे बीमारी से बचने के लिए सुबह A1 और रात को A2 गोली लेते हैं, वे सभी हर 7 दिन में अपनी जन्मतिथि के अनुसार 200X पावर की 5 गोली लेते हैं।**

उपचार से प्राप्त कुछ अनुभव। कंपनियां तैयार भोजन और पानी में प्रिजर्वेटिव एसिड मिलाती है और हम आंख बंद करके ऐसे बाजारू भोजन का उपयोग करते हैं। आज कंप्यूटर, मोबाइल फोन का बहुत उपयोग हो रहा है जिससे आंखें खराब होती है, कमाई करने में अधिकतर लोग तैयार खाना - पुराना प्लास्टिक बोतल का पानी, दवाई के केमिकल के उपयोग से शरीर के अंगों को पानी सुखाते हैं। आगे मैंने इन सिस्टम की **'साइड इफेक्ट्स'** के बारे में बताया है, अब अपने आप को बचाना हो तो मेरे अनुभव को बातें समझे और निरोगी जीवन पाने परिवार को सच्चाई दिखाकर बचाए।

मेरे साथ घटी हुई एक सत्य एक घटना और इस के कई डॉक्टरों के रिपोर्ट भी मेरे पास हैं। आंख देखकर सभी डॉक्टरों ने एक ही बात कही, **'संघवी आपको मोतियाबिंद है, अगर 5 लाख रुपए खर्च करके तुरंत सर्जरी नहीं कराएंगे, तो आपकी आँखें जाने की संपुर्ण संभावना है।' लेकिन 'आई क्लीनिंग ग्लास' और 'A1 & A2 गोली'**

की मदद से आज 77 साल की उम्र में मैं बिना चश्मे के पढ़ सकता हूँ और अंधेरे में भी कार चला सकता हूँ। आप भी मेरे इस प्रयोग से चिपका हुआ कचरा निकाल कर आपके लोगों की आंखें सुरक्षित रख सकते हैं। दवा की दुकान पर **'आई क्लीनिंग ग्लास'** मिलता है, उस ग्लास में शुद्ध पानी भरकर उसमें अपनी आँखें डुबोएं, फिर पानी के अंदर 30 - 40 बार आंखें खोलें और बंद करें ताकि पानी आँख के अंदर जा सके, इस तरह एक-एक करके दोनों आँखें साफ करें। इस सिस्टम से आप अपने 'प्राकृतिक आंख का लेंस' को बचा सकते हैं, जलन से भी राहत - चश्मे का नंबर भी नहीं बढ़ता। इस बात को समजनी होतो सबूत यह है कि, जब आप सुबह नींद करके उठते हो तो आंख के कोने पर प्राकृतिक कुछ कचरा आंख से निकाल कर चिपका होता है और जब पानी सूखता है तब कचरा अंदर ही रहता है और नजर कमजोर होती है।

एक सच्ची घटना, मेरी बेटी 'हेती' को गुर्दे की पथरी थी, उसे बहुत दर्द हो रहा था, उसके ससुराल वालों ने स्टेंट लगाने का फैसला किया लेकिन सूजन कम होने तक इंतजार करना पड़ा और मेरी तीनों बेटियों को मेरे इलाज के बारे में पता था इसलिए 'हेती' ने नीचे दी गई सिस्टम का पालन किया।

किसी भी बीमारी में, किसी भी आपातकालीन स्थिति में (आप इसे आज़मा सकते हैं और चमत्कार देख सकते हैं) मैं A1 की 5 गोली और A2 की 5 गोली = कुल 10 गोली लेता हूँ। सबसे पहले मैं सभी 10 गोली को एक कप में रखता हूँ और उस पर करीब 250 मिली. बहुत गर्म पानी डालता हूँ, इस तरह मैं गोली का घोल तैयार कर रहा हूँ। दर्द को कम करने के लिए, हर बार इसे अच्छी तरह से हिलाते हुए और हर 1 घंटे में मैं एक चम्मच ठंडे पानी की गोली का घोल देता हूँ और रात को सोने से पहले बचा हुआ सारा पानी पिलाता हूँ। बस इसी तरह केवल 3 दिनों के लिए, हर सुबह मैं एक नया घोल बनाता हूं और मूत्र के माध्यम से गुर्दे की पथरी को बाहर निकालता हूं। आज तक मैंने इस विधि से 3 दिनों में कई गुर्दे की पथरी को निकाला है, इसी तरह मैंने 'जोड़ों के दर्द, कैंसर' और कई अन्य बीमारियों से राहत प्रदान की है और मैं अपने आशीर्वाद और अपनी सुरक्षा के लिए सभी सफलता रिपोर्ट, वीडियो और पत्रों को रखा है।

मैं फिर से कह रहा हूँ कि, ये सब मेरे अनुभव हैं, इसकी कोई गारंटी नहीं है कि मेरे सिस्टम से सभी को लाभ मिलेगा, बार-बार लिखने का कारण यह है कि इन 12 गोलियों की खोज 200 साल पहले 'डॉ. शूसलर' की है यह मेरी नहीं है, लेकिन हां, मैंने अपने अनुभव से A1 और A2 गोलियां जरूर तैयार करवाई हैं, अगर आपको विश्वास और श्रद्धा हो, तो किसी भी ऑपरेशन से पहले एक बार इसे आजमा कर देखलें।

आज हर खाने - पीने में मिलावट होती हैं, इसे बीमारी बढ़ रही हैं, स्वस्थ रहने लोग दवा लेते हैं लेकिन यह कोई जीवन जीने का तरीका नहीं है। सच तो यह है कि पुराने दिनों में हर घर में 'स्वस्थ भोजन, धन और खुशी' थी जिसे हम वापस चाहते थे, इसलिए स्वस्थ रहने मेरे कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दे रहा हूं जिससे हर कोई बीमारी से बच सकता है और हमारी **'श्री सावे जैविक कृषि की सिस्टम - OFS' से स्वस्थ भोजन प्राप्त करके धनवान भी बन सकते हैं।**

स्वस्थ रहने के लिए भगवान ने मनुष्य को 100% शाकाहारी बनाया है, लेकिन डॉक्टर कहते हैं कि अंडे खाओ!! लोग इस पर विश्वास करके खाते हैं, इस तरह उनका शरीर कूड़ेदान और कब्रिस्तान बनता है। **देखिए हम क्या खा रहे हैं?** मैं अपने नए अनुभव के आधार पर कुछ नई जानकारी जोड़ रहा हूँ। **लालच में आकर लोग खाने में एसिड मिलाते हैं और सच तो यह है कि ऐसा पैसा जीवन के अंत में किसी काम का नहीं होता, तो ऐसे पैसे कमाने का**

<u>क्या फायदा जो अभिशाप - बद्दुआ कमाती हो और गलत कर्म की सजा भी भोगतें</u>? ऐसा जहरीला खाना खाने से जब दर्द होता है, तो कौन से नंबर की गोली जल्दी आराम देगी, वह जानकारी भी मैंने दी है।

1) वैज्ञानिकों ने साबित किया है कि उबले हुए पानी में 6 घंटे के अंदर बैक्टीरिया फिर से आते हैं, लेकिन अगर आप शुद्ध मिनरल वाटर के नाम पर बिकने वाले पानी की बोतल खोलकर धूप में रख दें तो कई महीनों के बाद भी उसमें बैक्टीरिया नहीं आते, क्योंकि उस पानी में एसिड मिला होता है और प्लास्टिक की बोतल होने के कारण वह धूप में गर्म हो जाती है जिससे **'कैंसर'** होने की संभावना बढ़ जाती है।

2) आमतौर पर दूध से दही बनाने के लिए हम थोड़ा पुराना दही मिलाते हैं और 6 घंटे में मीठा दही बनता है और कुछ ही घंटों में खट्टा होता है और 2 दिन में खराब होता है। **सबसे अच्छी बात यह है कि सुबह दही जमा लें और दोपहर तक खा लें। अगर जोड़ों के दर्द से बचना है तो शाम को दही न खाएं और अगर खाना ही है तो पहले उसे गर्म कर लें।** बाजार में मिलने वाला दही कभी खराब नहीं होता और उसे दूध में मिलाने से नया दही कभी नहीं बनता, 5 दिन बाद भी वो खराब नहीं होता!! क्यों? क्योंकि वो दही फैक्ट्री में एसिड डालकर बनाया जाता है।

3) ब्रेड हर घर में इस्तेमाल होती है और सब मानते हैं कि **'अगर ब्रेड मुलायम है तो वो फ्रेश है'।** कंपनियाँ इसका फायदा उठाती हैं और कच्ची ब्रेड बेचती हैं जो खराब होने के बावजूद मुलायम रहती है। सबूत देखिये, अगर आप नई ब्रेड लें और बीच में नाक डालकर सूंघें तो आपको खट्टी बदबू आएगी। बहुत से लोग सोचते हैं कि गेहूँ से बनी ब्राउन ब्रेड मैदे की ब्रेड से अच्छी होती है, कंपनियाँ इसी गलतफहमी का फायदा उठाती हैं और सफेद ब्रेड में ब्राउन रंग मिलाकर उसे ब्राउन ब्रेड के नाम से बेचती हैं। सच तो ये है कि **ब्रेड-पिज्जा आँतों से पानी सोख लेता है और आँतों में चिपक जाता है जिससे कब्ज़ और कई बीमारियाँ होती हैं** हम गुजराती जैन लोग रोटी से परहेज करते हैं और रोटी को ज्यादा सेक कर खाते हैं, जिसे हम **'खाखरा'** कहते हैं, हम इसे अच्छे स्वाद के लिए धनिया की चटनी, जीरा पाउडर, काला नमक लगाकर खाते हैं।

4) में 'जैविक खेती' करता हुं और जानता हूं कि MFS से अधिक उत्पादन प्राप्त करने कितने जहरीले रसायनों का उपयोग होता है। अब बाजार से फल और सब्जियां खरीदने के बाद और उन्हें उपयोग करने से पहले, हम उन्हें कुछ समय के लिए बेकिंग सोडा के पानी में डुबोते हैं, फिर ताजे पानी से साफ करते हैं। क्या आपको लगता है कि, **कंपनी अपने उत्पादन को इस तरह से साफ करती होंगी ताकि आपको कोई बीमारी न हो?** सभी MFS उत्पादों में से इस एक उपज को देखें। जब आप बीज रहित अंगूर खरीदते हैं, तो उन्हें ध्यान से देखें, प्रत्येक अंगूर पर कई सफेद छोटे बिंदु होते हैं, **एक अंगूर लें और बीच से काटे, आपको इसमें एक मरा हुआ बीज दिखाई देगा, फिर इसे 'बीज रहित अंगूर' क्यों कहा जाता है?** अब यह जाने कि, बीज रहित अंगूर कैसे तैयार होती हैं? शुरुआत में जब अंगूर छोटे होते हैं, उस समय अंगूर के पूरे गुच्छे को **'जिब्रेलिक एसिड'** में डुबोया जाता है ताकि **'बीज रहित - नपुंसक अंगूर'** तैयार हो। आज ऐसी तरह के सभी **MFS** उत्पादों से कंपनी अपने सारे उत्पाद तैयार करते हैं जैसे कि, **'शराब, बीड़ी - हुक्का, सिगरेट आदि'** और उनके उपयोग के बाद लोग **'नपुंसकता और कई असाध्य रोगों से ग्रस्त होते हैं।'** पुराने दिनों में ऐसी ही उपज को **'जैविक खेती'** के माध्यम से तैयार की जाती थी और उस उपज किसी को भी लीवर और फेफड़ों के कैंसर की समस्या नहीं हुई, जो आज हम अधिकांश घरों में देखते हैं। **पुराने दिनों में पुरुष और महिलाएं स्वस्थ थे, अपने जीवन का आनंद लेते थे, एक पूरी क्रिकेट टीम तैयार करके सारा परिवार एक साथ रहते थे और आज.....!!??**

5) बाजार से खरीदे गए ताजा फल और सब्जियां कुछ ही दिनों में खराब होती हैं। लेकिन फैक्ट्री में बने उत्पाद जैसे जैम, टमाटर और अन्य सभी सॉस कभी खराब नहीं होते। मैं यह बात पूरे विश्वास के साथ कह रहा हूँ क्योंकि मैंने सरकारी प्रोसेसिंग क्लासेस की हैं, इसमें **'प्रिजर्वेटिव एसिड डालना जरूरी है ताकि यह खराब न हो और यह जानकारी**

प्रोडक्ट लेबल पर लिखी होती है', इसलिए पढ़ें, सोचें और फिर खाएं।

6) गधा सभी पौधे खाता है, लेकिन तम्बाकू कभी नहीं खाता। खेत में तम्बाकू के पत्तों पर धूल और कई रसायन लगे होते हैं और जब वे सूखता हैं तब उसे गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, चुरूट जैसे उत्पाद बनते हैं जिनसे **'कैंसर'** होता है। **'यूट्यूब' पर 'कल्याणस्वामी' @vinamavaani का एक वीडियो देखें जिसमें वैज्ञानिक ठोस जानकारी दी है कि, मानव मल को सुखाकर गुटखा कैसे तैयार होते हैं और धन पाने अपनी आत्मा और ज़मीर बेच चुके कलाकार, क्रिकेटरों और कई राक्षसी आत्मा की मदद से वह मोत का सामान बेचते हैं।**

7) 'यूट्यूब' देखें, कचरे के डिब्बे से बचा हुआ, नहीं बिका वह, सड़े हुए गेहूं को, पहले सुखाते हैं, उससे फिर आटा बनाता हैं और नया उत्पाद। जैसे कि ब्रेड और कई अन्य खाद्य पदार्थ जो कम से कम 7 दिन पुराना होता है, उसे केवल ओवन में गर्म करके बेचते हैं और सभी उसे स्वाद लेकर खाते हैं, असल में सभी वह खाना नहीं, बल्कि उसी पर छिड़का मसाला और कई चटनी - सॉस को खाते हैं। कई उत्पादों में से केवल एक को ठोस सबूत के साथ देखते हैं जो साबित करता है कि, यह खराब आटे से बना हुआ हैं। <u>हम बिस्कुट खाते हैं, वही एक कुत्ते को दें, पहले कुत्ता उसे सूंघता है, अगर वह अच्छा है तो वह खाता है वरना मुंह फेरकर चला जाएगा, क्योंकि 'भगवान' ने कुत्ते को बुद्धि दी है कि, क्या खाना चाहिए और क्या नहीं,</u> लेकिन इंसान बिना सोचे, उसी प्रकार का खाना, भिखारी समान कतार में खडे होकर और विनती से मांग कर खाते हैं, नतीजा हमारी आंखों के सामने है।

8) पशु-पक्षी अपना भोजन कच्चा खाते हैं, जबकि हम खाना आग पर पकाकर, कई अशुद्ध मसाले डालकर खाते हैं, इसलिए कई विदेशी देश ने हमारे तैयार मसालों को आयात करना बंद किया, लेकिन वह **OFS** से उगाए गए हो, तो विश्व सामान्य कीमत से 4 गुना अधिक कीमत पर खरीदने के लिए तैयार हैं, जो **हमें हमारी OFS के लिए मिल रहे हैं।** खाना चाहे घर का हो या बाजार से खरीदा हो, खाने से पहले उसे गर्म करें, ताकि उसमें किसी तरह का **'साइड-इफेक्ट'** हो तो वह दूर हो सके, बस इसी कारण **<u>प्रकृति ने इंसान को गर्म खाना खाने की अनुमति दी है।</u>**

मेरे गुरु श्री सावे ऋषि जीवन जीते थे, वन में तपस्या के समय ऋषि केवल 85 ग्राम अंकुरित अन्न खाते हैं, उसी तरह श्री सावे हर रात आसानी से पच जाए इसलिए रात के खाने में वे 25 ग्राम मूंग +25 ग्राम गेहूं + 15 ग्राम चना + 10 ग्राम मूंगफली + 5 ग्राम तिल और 5 ग्राम मेथी खाते थे = इस प्रकार वे 85 ग्राम अंकुरित अन्न में नींबू का रस, धनिया और खजूर की चटनी मिलाकर खाते थे और वह खाकर 94 साल तक निरोगी जीवन बसर किया।

9) 80% बीमारी अशुद्ध दूध, घी और तेल से होती हैं। **पहले 'प्राकृतिक सत्य' जान लें।** गाय जब बछड़े को जन्म देती है, तब तक वह अपनी माँ का दूध पीता है, जब तक उसके दाँत नहीं आते, एक बार घास खाने लगे, तो वह बछड़ा जीवन भर दूध नहीं पीता। अब इंसानों को ही देखिये, बच्चे अपनी माँ का दूध पीता हैं और **दांत आने के बाद भी वे जानवर का दूध पीता है!! आज सारा विश्व 'जर्सी गाय' का अशुद्ध दूध पीता है।** जरा सोचिए, प्रतिदिन हजारों पशु काटे जाते हैं, फिर प्रतिदिन यह हजारों लीटर दूध कहां से आता है? **आज सभी जानते हैं कि नकली दूध कैसे तैयार होता है।** संक्षेप में, **'प्रकृति सत्य' के अनुसार इसे छोड़ देना ही बेहतर है** और यदि दूध पीना ही है, तो शास्त्रों के अनुसार **'देसी गाय'** का दूध पीने तथा उसी के 'घी' का उपयोग करें। सभी रोगों से बचने के लिए किसी छोटे गांव से दूध, घी तथा तेल खरीद कर उपयोग करना चाहिए। **अन्यथा घर पर ही घी तैयार करें तथा शुद्ध तेल प्राप्त करने के लिए 'यूट्यूब' पर अनेक छोटी-छोटी मशीनें उपलब्ध हैं, इससे आप गृह उद्योग भी कर सकते हैं।**

10) किसी से भी यह प्रश्न पूछिए: **गन्ने से निकलने वाले रस का रंग कैसा होता है?** सभी कहेंगे कि वह हरा होता है और उस रस से बना गुड़ भूरा या काला होता है, **फिर चीनी सफेद कैसे बनती है? क्योंकि कारखानों में भूरी चीनी**

को 'सल्फर केमिकल' के पानी से साफ करते है, तब जाकर सफेद चीनी मिलती है। सच तो यह है **कि 'पटाखे इसी गंधक के पाउडर से बनते हैं'**, यही कारण है कि, विद्वान और डॉक्टर चीनी की जगह **'जैविक गुड़'** का प्रयोग करने को कहते हैं। चॉकलेट बनाने वाली कंपनियां कड़वी चॉकलेट को मीठा बनाने के लिए बहुत अधिक चीनी मिलाते हैं, आइसक्रीम बिना दूध के बनाई जाती है; तेल, पानी, चीनी, मेवे और बर्फ डालकर इस रस को बहुत तेज गति से घोला जाता है और घोल को डीप फ्रिज में जमा कर रखते हैं। **कोल्ड ड्रिंक में कम से कम 7 चम्मच चीनी होती है।** संक्षेप में, ऐसे अशुद्ध पदार्थ हजम करना कठिन हैं, इसलिए इसका सेवन करने से बचें और बच्चों को सही जानकारी देकर सावधान करें।

यदि रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो तो ऐसे गलत भोजन के कारण गला लाल और सूजन आती है और पानी पीना कठिन होता है, कभी-कभी बुखार आता है और कचरा खाने वाले कीड़े बनने लगते हैं, **इसे प्राकृतिक बुखार आता है**, जो एक अच्छा संकेत है और वह बुखार की गर्मी से कचरा खाने वाले कीड़े दूर होते हैं। **जब गोली का सही नंबर समझ में नहीं आता तो आराम के लिए और किसी भी तरह के बुखार के लिए 4, 5, 9 और 11 नंबर की तीन-तीन गोलियां तीन दिन तक चूसने को कहता था। बुखार 2 डिग्री से ज्यादा होता तो उसे दबाने के लिए 3 दिन तक डॉक्टर की दवा लेने को कहता था और साथ ही 'साइड-इफेक्ट' से बचने के लिए A1 और A2 गोलियां देता था।**

11) ब्लड प्रेशर और डायबिटीज़: इन बीमारी से पीड़ित लोग सोचते हैं कि यह बीमारी ठीक नहीं हो सकती, लेकिन मेरे पास एक पुरानी किताब है जिसमें डॉक्टर ने इसके इलाज के बारे में लिखा है। **किताब के अनुसार अगर मेरे जैसे किसी व्यक्ति की उम्र 77 साल + 100 = 177 है तो उसे सामान्य ब्लड प्रेशर मानते थे।** कई वर्षों से मेरा रक्तचाप 150 से 180 के बीच रहता और गलत खान-पान के कारण यह 200 तक बढ़ता था, उस समय मैं 3 दिन तक आयुर्वेदिक दवा से शरीर को शुद्ध करता और **'A1 और A2'** लेता था, परन्तु आज तक मैंने कोई दवा नहीं ली है।

पहले **'हिन्दू धर्म'** के विद्वान समाज को स्वस्थ रखने के लिए सन्देश देते हुए कहते थे कि, **'जो व्यक्ति 7 दिन में एक बार अन्न त्याग करके उपवास करता है, उसे 'भगवान का आशीर्वाद और 'मोक्ष प्राप्त का पुण्य मिलता है।'** उपवास में सहायता करने प्रत्येक शनिवार को मंदिर में नीम के पत्ते या आयुर्वेदिक दवा का कडवा पानी मुफ्त देते थे। यदि आप बुद्धिमान हो, तो इस उपवास से समाज में बीमारी से बचने की **'भारतीय संस्कृति की योजना को आप समझेंगे।'**

आजकल सामान्य रक्तचाप 130 माना जाता है, क्यों? इसका कारण सभी जानते हैं। अब सत्य को जानने एक प्रयोग शुरू करने से पहले, रक्तचाप और मधुमेह की रीडिंग नोट कर लें। पेट साफ करने के लिए कोई आयुर्वेदिक दवा लें जो पेट आँत से गंदगी निकालने में मदद करें, केवल प्रयोग और सचाई जानने दवा तीन दिन तक रोज रात को लें, इतनी मात्रा लें कि दिन में कम से कम 2 से 3 बार पेट साफ हो सके, **इन तीन दिनों तक कमजोरी से बचने सिर्फ सब्जियों का सूप, सूखे मेवे, अधिक पके केले और फल ही लें, गन्ने का रस चूसें या एक गिलास जूस लें, कोई पका हुआ भोजन न लें, तीन दिन तक सिर्फ A2 और A2 की गोली लें, नतीजा देखें। चौथे दिन अपना रक्तचाप और मधुमेह जांचें, बीमारी के कारणों को समझेंगे, तीन दिन में आप हैरान रह जाएँगे और सारी सच्चाई पता चल जाएगी**

अब आपको ये सोचना है कि, **'कोई भी बीमारी एक रात में नाही आती है और नाही जाती हैं।'** बीमारी, दर्द सब आपके हैं, तो सोचिए आप अपना जीवन कैसे जीना चाहते हैं? तो इन मासूम 12 गोलियों पर विश्वास करके और अपने अनुभव के साथ, **'मानव सेवा'** के लिए आपको आगे आना चाहिए और दूसरों की मदद करनी चाहिए, **अगर 200 साल पहले डॉ. शूसलर ने यह मुफ्त सेवा शुरू न की होती, तो मैं भी आपकी मदद नहीं कर पाता।**

12) अपनी पसंद के अनुसार 'लड़का या लड़की' प्राप्त करें। (मेरे घर में तीन देवियों के जन्म होने के बाद मुझे यह **'प्राकृतिक वैज्ञानिक सिस्टम'** की जानकारी **'श्री हरभजन के एक सिख परिवार'** से मिली है।

प्रकृति चक्र के अनुसार **'जन्म और मृत्यु'** एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए इन्हें चालू रखने के लिए प्रकृति ने **'पुरुष और स्त्री'** की रचना की है। समाज केवल विवाह को आशीर्वाद देता है, लेकिन **'संतान प्राप्ति के पवित्र कार्य'** के बारे में कोई उचित मार्गदर्शन नहीं देता, **यहां तक कि अंग के बारे में सही जानकारी देने में भी हिचकिचाहट होती है।** कई लोग मनगढ़ंत **'सेक्स वीडियो'** देखने के कारण खुद को कमज़ोर समझते हैं, **कई अनपढ़ डॉक्टर 'हस्तमैथुन' करने की सलाह देते हैं,** जिसके कारण नई पीढ़ी गुमराह होकर कमज़ोर होती है और शादी के बाद बच्चे पैदा करने में असमर्थ होते हैं। **अब डर पर काबू पाएँ और अपनी इच्छानुसार संतान प्राप्त करें।**

आपने अपने जीवन में देखा होगा कि कई **महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती हैं!! ऐसा क्यों?** हिंदू शास्त्रों में, 60 के बाद ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए कहा गया है, **क्योंकि एक बार हस्तमैथुन करने और अपनी पत्नी के साथ संभोग करने में एक पुरुष कम से कम 100 ml. रक्त खर्च करता हैं।** बार-बार एक ही काम करना एक युवा पुरुष भी थकता हैं, जब्कि महिला को तो केवल विर्य लेना है और वह तब थकती है जब वह मन से ग्रहण करके तृप्त होती है। आज के **MFS** उत्पादन में वे पोषक तत्व नहीं हैं जो खर्च किए गए रक्त की तुरंत भरपाई कर सकें। कृत्रिम रूप से तैयार किए गए सेक्स वीडियो में पति-पत्नी संतान प्राप्ति के लिए जल्दबाजी करते हैं, जिसमें वीर्य की बर्बादी होती है और दोनों असंतुष्ट रहते हैं। सफलता न मिलने का दूसरा कारण यह है कि पुरुष हमेशा लिंग में रक्त भर जाने के कारण जल्दबाजी करता है, जबकि पत्नी के मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार होने से पहले और जब तक महिला वीर्य (प्रसाद) ग्रहण करने की अनुमति नहीं देती, इसी के पहले पुरुष विर्य बर्बाद करता है, जिसके कारण संबंध में सफलता नहीं मिलती। **इस विधि को बार-बार प्रयोग करने से पुरुष के शरीर में रक्त की कमी होती है, MFS के खाने में वह पावर नहीं जो खोई हुई शक्ति फौरन भर पाए, इसलिए नपुंसकता आती है, पुरुष शारीरिक और मानसिक रूप से टूटता है और जानकारी के अभाव में उसकी असमय से पहले ही मृत्यु होती है।**

जीवन में एक हाथ से ताली नहीं बजाई जा सकती इसलिए **यदि स्त्री चाहे तो अपने पति की आयु बढ़ा सकती है,** क्योंकि पुरुष अपनी पत्नी से केवल प्रेम चाहता है और प्रेम करते समय पत्नी का कर्तव्य है कि वह पति को समझाए कि वह पवित्र कार्य करने में जल्दबाजी न करे और यदि वह भी संतुष्ट होना चाहती है तो उसे खुले मन से सारी बांते कहनी चाहिए। **यदि दोनों को जीवन में सफलता चाहिए तो 'शिवलिंग के पवित्र पूजन में पत्नी की अनुमति लेकर उसे उसकी इच्छा अनुसार उसका प्रसाद - वीर्य प्रदान करें।' ऐसा होने पर दोनों 100 वर्षों तक प्रेम से एक दूसरे से बंधे रहेंगे, पति कभी भी किसी अन्य स्त्री के बारे में और गलत कार्य के लिए सोचेंगे तक नहीं।**

अब आपको अपने डर पर काबू पाने और अपनी पसंद की संतान पाने के लिए जल्दबाजी से बचने, पुरुष को कुछ व्यायाम करनी जरूरी है और खुद की मन की शक्ति को बढ़ा सकते हैं और अपने वीर्य को बचा सकते हैं। जब भी पेशाब करें तब पेशाब के वेग को बार-बार रोकें और छोड़ें, इस कसरत से वीर्य को रोकने में सफलता मिलती है और पत्नी इच्छा अनुसार संतान प्राप्ति का पवित्र कार्य संपन्न होता है।

40 साल से मुफ्त इलाज से यह ज्ञान भी मिला कि, मनगढ़ंत **'सेक्स वीडियो'** देखने के कारण कुंवारी कन्या अपनी मन की भुख संतोष ने दो महिलाएं भी **'हस्तमैथुन'** करती है, कई यंग लडको के साथ सेक्स करके गर्भवती बनती है तब मां समाज से बचाने गर्भपात करने चुपचाप कहीं पर भी जाती है, **योनी में कई औजार डलवा कर बेटी का गर्भपात कर वाती है, इसे लड़की कई बीमारी का शिकार बनती है, फिर भी सही ज्ञान न देकर मां बेटी को कमजोर बनाती है।** कई गलत खानपान के कारण भी लड़की योनी की कई बीमारी से पीड़ित होती है। संक्षेप में नई पीढ़ी गुमराह होकर कमजोर होती है, दर्द के कारण पति की इच्छा पूरी नही कर पाती और विवाह के बाद संतान प्राप्त नहीं कर पाती।

इसलिए प्राकृतिक विज्ञान को समझें, यदि दूध का बर्तन साफ न हो तो दूध खराब हो जाता है और यही बात महिलाओं पर भी लागू होती है, गर्भाशय के कई बीमारी के कारण उनमें प्रजनन क्षमता नहीं होती और बच्चा गिर जाता है जिसे **'गर्भपात'** कहते हैं, (मेरे जीवन में तीन बार हो चुका था और फिर **A1 और A2** से सफलता मिली और **तीन देवी का आगमन हुआ**)

यदि किसी पुरुष में वीर्य की कमी है या वह कमजोर है तो भी वह बच्चा पैदा करने में असमर्थ होता है। ऐसी स्थिति में लोग बच्चा पैदा करने के लिए डॉक्टर के पास मार्गदर्शन के लिए जाते हैं। बच्चा पैदा करने के लिए डॉक्टर किसी और का वीर्य (शुद्ध या अशुद्ध) डालते हैं और कई दवा देते हैं ताकि बच्चा गर्भाशय में रहे और गिरे नहीं और अंत में **'सिजेरियन'** किया जाता है। ऐसे कई बच्चे होते हैं, जो अप्राकृतिक रूप से पैदा होते हैं, कमजोर होते हैं, कई विकृतियों के साथ पैदा होते हैं, कई के शरीर के अंग गायब होते हैं और ऐसे बच्चे जीवन भर दवाओं के सहारे जीवित रहते हैं। **ऐसी स्थिति को देखकर कई लोग बच्चे नहीं चाहते हैं।** कई लोग पैसों की समस्या के कारण बच्चे नहीं चाहते हैं, मगर यह समस्या तो **'कुछ न करो और खूब कमाओ'** को पढ़कर दूर होती है और **'करोड़पति'** बनकर जीवन का आनंद ले सकते हैं।

इस **'सुंदर हरी दुनिया'** की देखभाल के लिए एक नए का जन्म होता है और हर माता-पिता अपना कर्तव्य मानकर, 18 साल तक उसी की देखभाल करते हैं और बाद में वही बच्चा माता-पिता की मृत्यु तक देखभाल करता है। यह एक **'प्राकृतिक चक्र'** है। **एक आता है और पुराना सब कुछ छोड़कर खाली हाथ वापस जाता है। 'प्राकृतिक चक्र' का ख्याल रखना हर नई पीढ़ी का कर्तव्य है और इसके लिए 'पैसा भी जरूरी है' और इस मामले में 'प्राकृतिक चक्र' ही ख्याल रखती है, कैसे? नियम अनुसर बातों का पालन करके कोई भी 'करोड़पति' बन सकता है, वह जानकारी आपने पढ़ी है।** जैसा कि मैंने कहा, हर पुरुष और महिला को अपने शरीर को स्वस्थ रखने की जरूरत है। **आज 77 साल की उम्र में मैं A1 और A2 गोली की मदद से हर तरह से स्वस्थ हूं और अपने जीवन का आनंद ले रहा हूं। उसी तरह आप भी घर पर अपने शरीर की जांच कर सकते हैं। सुबह उठते समय अगर आपका लिंग खून से भरा हुआ है और उसकी स्थिति सेक्स के समय जैसी है तो यह स्वस्थ होने का संकेत है और आप सेक्स कर सकते हैं।**

मैं फिर से कह रहा हूँ कि, प्राकृतिक सिस्टम को समझे, पुरुष अपने लिंग से तैयार होता है, लेकिन महिलाएं अपने मन से सेक्स के लिए तैयार होती हैं, इसलिए अच्छे परिणामों के लिए कभी भी **'पवित्र कार्य'** के लिए जल्दबाजी न करें और अपनी पत्नी की सहमति के बाद ही सेक्स करें। **यह एक सत्य है कि लड़का या लड़की का जन्म पुरुष के वीर्य पर निर्भर करता है, क्योंकि जीवन में आप जो बोते हैं, वही काटते हैं, इसलिए इस मामले में कभी भी अपनी पत्नी को दोष न दें, <u>'एक महिला में तो 9 दुर्गा माता होती है'</u>, सफलता मिलती है मगर फल देना तो अंत में 'भगवान' के हाथ में है जो 'कर्म' के अनुसार लड़का - लड़की देता है।**

प्राकृतिक वैज्ञानिक सिस्टम' की यह जानकारी 'श्री हरभजन - सिख परिवार' ने दि थी। ***'लड़का या लड़की' की इस गणना का आधार 'समुद्री ज्वार और भाटा' पर है, यदि कोई महिला मासिक धर्म समाप्त होने के 12वें - 13वें - 14वें दिन शिवलिंग के पवित्र पूजा का कार्य, मतलब कि संभोग करती है और यदि उस दिन पूर्णिमा हो तो 'लड़का' होने की संभावना है और यदि वह अमावस्या का दिन हो तो 'लड़की' होने की संभावना है। यदि पूर्णिमा और अमावस्या के दिनों को ध्यान में रखकर भी यह कार्य सफल हो सकता है।***

प्राकृतिक वैज्ञानिक सिस्टम' गणना मुझे ठोस लगी, क्योकि में एक किसान हुं और हम पूर्णिमा के दिन नई फसल बोते है और बहुत अच्छी उपज मिलती है। एक और सबूत, पूर्णिमा के दिन पागलखाने में भी यह बात देखती हैं, पूर्णिमा के दिन पागल लोगों के पास बहुत अधिक शक्ति होती है और कोई भी उन्हें नियंत्रित नहीं कर पाता, इसलिए जंजीर से उसे बांध कर रखते हैं। इस दिन कई पुरुष में भी काफी सेक्स पावर बढ़ता है और अपना

मनका संतुलन खो बैठता हैं और उस दिन किसी भी महिला - लड़की का बलात्कार कर बैठता हैं।

अब आगे के मेरे जीवन के कुछ अनुभव। बच्चो के अंगों का विकास हो इसलिए ढीले कपड़े पहनाए। यदि लड़का का जन्म हो तो माँ का यह कर्तव्य है कि, सुबह स्नान के बाद **लिंग की गर्दन पर गाय का घी या नारियल का तेल** लगाएं ताकि त्वचा जन्म से ही मुलायम हो जाए और लिंग की त्वचा आगे-पीछे हो सके। इससे पेशाब आसानी से आता है और पेशाब के साथ निकलने वाले क्षार से होने वाली बीमारियों से भी बचाव होता है। बचपन से ही तैलीय पदार्थ लगाने की आदत विवाह के बाद संतोषजनक संबंध बनाने में सहायक होती है। इसी प्रकार लड़की का जन्म हो तो **योनि में थोड़ा गाय का घी या नारियल का तेल** लगाना चाहिए और उसके स्तनों की अच्छी तरह मालिश करनी चाहिए ताकि स्तन मुलायम होकर अच्छा विकास हो। बचपन की यह आदत विवाह के बाद माँ बनने पर काम आएगी, बच्चे को भरपूर दूध मिलेगा और रोजाना मालिश करने से **'स्तन में कैंसर की गांठें'** नहीं होंगी। आप यूट्यूब पर स्तन मालिश देख सकते हैं।

<u>आपातकालीन स्थिति में मुझे हुए और प्राप्त बायोकेमिक गोली के कुछ अनुभव।</u>

1) जब खाना पचता नहीं और आँतों में पड़ा रहता है, गैस बनती है, सिर दर्द होता है, मुँह में खट्टा या कड़वा पानी आता है, एसिडिटी के कारण सीने में जलन - तेज दर्द - बेचैनी - दिल की धड़कन बढ़ जाना, यह दर्द कोई भी सहन नहीं कर सकता, मरीज और परिवार वाले सोचते हैं कि यह हृदय रोग होगा, कोलेस्ट्रॉल (गाढ़ा खून) और ECG रिपोर्ट भी यही बताती है, रिपोर्ट देखकर परिवार वाले डर जाते हैं और डॉक्टर एक धातु की **'ट्यूब - रक्त वाहिका में स्टेंट' डाल देते हैं, आज तक मेरी पत्नी को एक और अन्य को 4 स्टेंट लगे हैं !! लेकिन सवाल यह है कि उस कचरे का क्या, जो दर्द देता है और आपात स्थिति पैदा करता है? 77 साल की उम्र में ऐसी स्थिति मैंने ऐसी स्थिति में कई बार मैं गुजरा हूं।**

एसिडिटी, आंतों और छाती में जलन, यह दर्द अक्सर होटलों और मुफ्त की दावतों में खाने से होता है और फिर बहुत बेचैनी होती है, पानी पीने का भी मन नहीं करता। यह एक आम बात है कि जब आग लगती है तो उसे बुझाने के लिए पानी का इस्तेमाल किया जाता है, इसी तरह जब मुझे गलत खाना खाने से एसिडिटी, आंतों और छाती में जलन होती है, तो आग बुझाने के लिए **मैं मजबूरन 3 से 4 गिलास सादा पानी पीता हूं, मुंह में तीन उंगलियां डालकर शरीर को शुद्ध करता हूं और उल्टी करके खट्टा पानी और अशुद्ध भोजन को बाहर निकाल देता हूं, यह वही एसिड है जो आंतों - छाती में दर्द पैदा करता है, जैसे ही यह कचरा बाहर निकलता है, मुझे तुरंत काम चलाव राहत मिलती है।**

सभी जानते हैं कि यह दर्द बहुत अधिक तला हुआ और मसालेदार भोजन खाने से होता है। आपने देखा होगा कि जब कोई बहुत गुस्से में होता है, तो वह गाली देता है और चिल्लाता है, **'जा तेल लगाने - जाकर तेल पी कर मर।'** ऐसा कहकर वह तेल के इस्तेमाल से बचने का संकेत देता है। अगर कोई स्वस्थ जीवन जीना चाहता है, तो उसे तला हुआ और मसालेदार भोजन से बचना चाहिए और सभी बीमारियों से बचने के लिए हर सात दिन में आयुर्वेदिक दवा से पेट साफ रखे। **'एसिडिटी और हार्टबर्न' से तुरंत राहत पाने के लिए मैं अपने पास कायम 10 नंबर की गोली रखता हूँ, मुझे और अगर किसी को इस तकलीफ़ में देखता हूँ तो तुरंत 5 गोली का रस चूसने को कहता हुं और कुछ ही मिनटों में राहत मिलती है। संक्षेप में, आपातकालीन स्थितियों से बचने के लिए 2, 4, 10 नंबर की गोली अपने पास रखें।**

2) जैसा कि मैंने कहा, **'प्राकृतिक क्षार की गोली' का बीमारी के नाम से कोई लेना - देना नहीं है, इसलिए किसी भी तरह की बीमारी में 3 दिन के अंदर तुरंत आराम पाने के लिए मैं A1 और A2 की 5-5 गोली को और अगर ये गोलियां उपलब्ध न हों तो बोतल नंबर 2, 4, 5, 6, 8 और 10 से 10-10 गोली लेता हूँ।** जैसा कि ऊपर बताया, मैं इन गोली का गर्म पानी में घोल तैयार करता हूँ और **'इमरजेंसी'** में उसी तरह इस्तेमाल करता हूँ। संक्षेप में, अब तक आप बीमारी के कारण और उपचार के बारे में सब कुछ जान गए हैं। **मैं अपनी 40 साल की मुफ्त सेवा और अनुभव**

के आधार पर बार-बार कह रहा हूँ, यह 'बायोकेमिकल इम्यूनिटी बूस्टर 12 क्षार की गोली' है, यह सभी बीमारियों में राहत देती है, जब तक आप इसका उपयोग नहीं करते, आप सच्चाई कैसे जान पाएंगे?

3) सबसे अधिक दर्द एसिडिटी और गैससे होती है, यह दर्द न तो सोने देती है और ना ही बैठने देता है, मरीज को ताजी हवा के लिए खिड़की की तरफ भागना पड़ता है। मुंह में खट्टा पानी आता है, बार-बार डकार आती है, कुछ भी खाने पर छाती में बहुत दर्द होता है, **कई लोग बैठे-बैठे ही सो जाते हैं और घबराहट के कारण अचानक खड़े हो जाते हैं, यह कमजोर आंत की निशानी है,** इससे फौरन **नंबर 10** से राहत मिलती है मगर लंबी राहत के लिए लंबे समय तक और बहुत धैर्य के साथ इलाज करना पड़ता है। केवल 'देशी गाय का दूध', विशेष रूप से लौकी, कद्दू, ककड़ी आदि सब्जियों का सूप, अधिक पके फल, ताकत के लिए कुछ मात्रा में सूखे मेवे और रात के खाने में केवल चावल की खिचड़ी लेने से राहत मिलता है, मगर कभी कभी फिर से दर्द बढ़ता है क्योंकि सफाई के दौरान पुराना दबा हुआ कचरा धीरे-धीरे भीगकर बाहर आता है और कुछ समय के लिए फिर से वही पुराना दर्द होता है, ऐसे समय में तुरंत 2, 4, 6, 8, 10 की 3 -3 गोली लेने से आराम मिलता है। छींकने और खांसने से बहुत सारा सफेद, पानी जैसा, चिपचिपा, पीला और हरा रंग का बदबू वाला बलगम निकलता है, कभी-कभी नाक भी बंद होती है और फिर बलगम की गांठ अपने आप मुंह से बाहर आती है, कभी-कभी हल्का बुखार भी आता है जिससे कचरा खाने वाले कीटाणु बाहर निकल जाते हैं, संक्षेप में कई वर्षों से दबा हुआ कचरा बाहर आता है जरुर केवल धीरज रखनी जरुरी है।

इन 12 क्षार गोली ने मेरी आत्महत्या रोक दी और आज मैं 77 साल की उम्र में सारी असाध्य बीमारी से राहत पाकर निरोगी जीवन जी रहा हूँ। 55 साल की उम्र में मेरी माँ को टाटा हॉस्पिटल में ब्रेस्ट कैंसर की सर्जरी के बाद बहुत तकलीफ़ हुई थी, लेकिन प्राकृतिक गोली लेने के बाद उन्होंने 103 साल तक आराम से जीवन बसर किया। आज मेरी A1 और A2 गोली लेने के बाद कई बुजुर्ग स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। अगर समाज चाहे तो मैं इस बात के सभी ठोस सबूत दे सकता हूँ।

50 साल के बाद मैं 1, 2, 6 और 10 नंबर की 5-5 गोलियां रोज सुबह 10 बजे और शाम को 5 बजे लेता हूँ, बढ़ती उम्र के साथ मांसपेशियों की ताकत कम होती है और नींद नहीं आती, जिसकी भरपाई यह गोली करती है। बीमारियों से बचने के लिए अगर आप हर घंटे सादा या गुनगुना पानी पीए और शरीर में **60%** पानी बनाए रखें तो बीमारियाँ आपको कभी छू भी नहीं पाएंगी, क्योंकि सभी बीमारियाँ डिहाइड्रेशन - शरीर से पानी सूखने के कारण ही होती हैं।

आज सारा भोजन में मिलावट क्यों है? क्योंकि बहुत से **'पवित्र आत्मा'** (लेकिन अपने कर्मों से लुटेरे, पापी और देशद्रोही) अपनी ज़रूरत से ज़्यादा धन चाहते हैं, इसलिए वे अपनी गलत योजना और धन के बल से उपयोगी सारे ज्ञान और उपयोगी जानकारी को दबाकर दुनिया को लूट रहे हैं। ये कलंकित लोग यह भी जानते हैं कि, गलत तरीकों से कमाया गया धन साथ नहीं आएगा और हमें **'बुरे कर्मों'** की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी और आप देख रहे ऐसे परिवार के लोग किस तरह मर रहे हैं। संक्षेप में भाई, ऐसे लोगों को अपने जीवन में जो भी गलत काम करना है करने दो, मेरी आपसे विनती है कि **आप उनका साथ देकर उनके पाप में भागीदार न बनें और आप यह भी जानते हैं कि, उनका उद्देश्य पूरा होने के बाद वह क्या करते हैं और <u>उनके काम में बाधा डालने वालों का क्या अंजाम करते हैं।</u>**

भाई, जितना वह लूट कर कमाते हैं उससे कहीं अधिक आप नीति नियम से कमा सकते हैं और वह भी केवल पानी सिंचाई और **'प्राकृतिक चक्र'** की मदद से, बिना किसी की **'नौकरी-गुलामी'** के आप **'आत्मनिर्भर'** बन सकते हैं और **'संयुक्त परिवार'** में बहुत खुशी से जीवन बसर कर सकते हैं, वही पाने की सारी जानकारी हम **'सावे और संघवी'** ने दी। हम सभी से अनुरोध करते हैं कि कृपया **'जियो और जीने दो'** के सिद्धांत को अपनाएं और अपने अनुभव से दूसरों

की मदद करें ताकि सभी खुशी से रह सकें और आपके सहयोग के **'नेक और अच्छे कामों'** से हम **'विश्व शांति'** कर सकें।

'जागो भाई, जागो' और देखो, यह 'नेक काम और विश्व शांति' करना क्यों ज़रूरी है?

कई सालों तक हम **'हिंदू और मुसलमान'** एक थे और हर क्षेत्र में तरक्की कर रहे थे, लेकिन अब दोनों समुदायों का धर्म हर तरह से बंटा हुआ है। आज जैन और पूरे हिंदू समुदाय को ही देख लीजिए, यह कई हिस्सों में बंटा हुआ है। एक उदाहरण देखिए, मैं जैन हूं लेकिन मुझे सिर्फ़ इतना पता है कि, **'जैन धर्म' में 8 पवित्र दिन होते हैं, लेकिन अभी तक सही तारीख नहीं पता!!** इसी तरह **'मुस्लिम समुदाय'** भी कई हिस्सों में बंट गया है। बंटवारे के बाद कई **'मुस्लिम देश'** अपने ही मासूम लोगों से लड़ते हैं, एक-दूसरे की जमीन, पैसा, संपत्ति हड़प ते हैं, अत्याचारी जानते हैं कि यह लूटी गई संपत्ति अंतिम यात्रा में उनके साथ नहीं आएगी, फिर भी वे उसी काम में लगे हुए हैं और अपने ही लोगों का गला काट रहे हैं। **ऐसा क्यों हो रहा है?** क्योंकि उसे प्रगति की कई ठोस जानकारी का पत्ता नहीं, सभी घुटन भरी जिंदगी जी रहे हैं, अत्याचार सह रहे हैं और यह मानकर जी रहे हैं कि, यह कष्ट हमारे भाग्य में लिखा है!! **हमारे बीच एकता नहीं हैं इसलिए मृत्यु के भय से, 1960 की श्री सावे जैविक कृषि सिस्टम और 200 साल पुरानी डॉ. शुस्लर की 12 गोली का प्रचार कोई नहीं करता, इसी कारण लोग किसी के रहमोकरम पर जीवन बसर करते हैं, अब सोचिए कब तक यह चलेगा।**

विदेशी लूंट और सभी मुसीबत से छुटकारा दिलाने, कई वर्षों के बाद हमारे 'एक ईश्वर' ने अपना दूत भेजा है, जिन्होंने चाय बेचने से अपना जीवन शुरू किया और हर कदम पर समाज की सभी समस्याओं का अध्ययन किया और बाद में श्री मोदी जी भारत के प्रधानमंत्री बने। समाज को स्वस्थ, समृद्ध और खुशहाल बनाने के लिए वे बार-बार कह रहे हैं कि कृपया 'जैविक खेती' करें और दुनिया को यमदूत, राक्षस और रक्तपिपासु लोगों से बचाने के लिए वे कहते हैं, 'अगर हम एक हैं, तब तक सुरक्षित हैं, अगर हम विभाजित हो गए, तो हम कट जाएंगे।'

हम एक थे इस बात ठोस सबूत, **'200 साल के शासन में अंग्रेज दुनिया के सबसे अच्छे किसान भारत को नहीं लूट पाए, लेकिन कुछ गद्दारों की धोखेबाज नीतियों के कारण भारत, पाकिस्तान और कई देश मात्र 60 साल में बर्बाद हो गए।'** अगर हम फिर से एकजुट हो जाएं और सभी का समर्थन प्राप्त करें, तो **'श्री सावे जैविक खेती सिस्टम'** के माध्यम से हम दुनिया की **'भूख और पानी'** की समस्या को हल कर सकते हैं, **'ग्लोबल वार्मिंग'** से छुटकारा पा सकते हैं और **'विश्व शांति'** भी स्थापित कर सकते हैं। अगर हम एकता नहीं दिखाते हैं, तो **'अगला विश्व युद्ध केवल भोजन और पानी के लिए होगा।'** इसे रोकना कैसे संभव होगा? इसके लिए **'कुछ न करें और खूब कमाएं'** विभाग पढ़ें।

दुनिया में कोई भी स्कूल / कॉलेज नई पीढ़ी को **जैविक कृषि** से करोड़पति बनने, **12 क्षार की गोली** से रोग मुक्त जीवन जीने और **'ग्लोबल वार्मिंग'** से छुटकारा पाने के बारे में सही शिक्षा नहीं दे रहा, इसलिए किसान **'आधुनिक कृषि'** अपनाने को मजबूर है और उपचार की 12 क्षार की जानकारी न होने के कारण बीमारी से लोग घुट घुट कर जी रहे हैं।

हम **'सावे और संघवी'** जानते हैं कि, पशु भी अपना जीवन जीता हैं, लेकिन हम तो इंसान हैं जो परिवार और समाज के लिए जीते हैं। खाली हाथ जाने से पहले, हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की ताकि सभी को **'निरोगी जीवन, सुख और समृद्धि का मार्ग मिले।**' खुशी और रोग मुक्त रहने के लिए हम सभी **'भगवान का आशीर्वाद'** मांग रहे हैं और हम मंदिर, मस्जिद और चर्च में उसे खोज रहे हैं, लेकिन वास्तव में **'भगवान'** हमारी आँखों के सामने हैं, एक **'किसान'** है और दूसरा **'डॉक्टर'** है और यह दोनों हमारी रक्षा करते हैं। **श्री भास्कर हीराजी सावे ने हमें 'जैविक खेती' की सभी खोजों के बारे में जानकारी दी है, जिससे सभी को 'स्वस्थ रहने का भोजन और पानी' मिले और डॉ. शूस्लर ने हमें 'प्राकृतिक 12 क्षार की गोली' के बारे में जानकारी दी है, जिसे आपने अब तक पढ़ा।**

मैंने **'12 क्षार की गोली'** के बारे में जानकारी दी ताकि सभी रोग मुक्त हो सकें। आज तक मैंने **'मोक्ष के आशिर्वाद'**

पाने के लिए मुफ्त गोली दी और 40 वर्षों के अनुभव से, सिर से पैर तक सभी बीमारी से राहत मिले इसलिए मैंने **'A1 और A2 मात्र दो गोली'** तैयार की। कई मरीजों ने राहत मिलने के बाद मुझे बधाई के पत्र और वीडियो भेजे, जिन्हें देखकर कई डॉक्टर भी मेरे पास गोली लेने आए, **अब मैं 77 साल का हूँ** और मैंने गोली देना बंद की, लेकिन जो कंपनी मेरे लिए **A1 और A2 गोली** बनाती थी, उन्हें मेरी **'समाज सेवा'** के बारे में पता था, इसलिए उन्होंने सोचा कि जब सभी को लाभ मिल रहा है तो हमें भी **'मानव सेवा'** करनी चाहिए, इसलिए मेरे सभी सबूत के आधार पर, **'2021 में उन्होंने सरकार से अनुमति ली'** और वे **A1 - 100 और A2 - 100 की गोली**, आहार की एक प्रति और **'चेतावनी लिखकर'** बेच रहे हैं। जीने राहत मिली वह भी लोगों की मदद और सेवा करने के लिए उसी **Rs.500/-** कीमत पर एक-एक बोतल बेच रहे हैं।

A1 और A2 गोली तैयार करने वाली फार्मा कंपनी: **CMHP Pvt. Ltd.** - अहमदाबाद - 382110.

मार्केटिंग: **श्री चिराग पटेल** +91 9825293304 - **लेकम लैबोरेटरीज**, पोस्ट. राकनपुर, ता. कलोल,

जिला. गांधीनगर - 382721, गुजरात. (भारत) ईमेल: elikempharma@yahoo.co.in

बायोकेमिकल इम्युनिटी बूस्टर - A1 और A2 गोली.

2 बोतलें - 200 गोली. कर शामिल हैं रु. 500/-, कूरियर अतिरिक्त

<u>अस्वीकरण:</u> हम यह दावा नहीं करते हैं कि हमारी A1 और A2 गोलियाँ किसी भी बीमारी का निदान, उपचार या इलाज करती हैं। इन गोलियों को लेने वाला कोई भी व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार होगा क्योंकि डॉक्टर, फ़ार्मेसी और कोई भी सहायक व्यक्ति किसी भी परिणाम के लिए ज़िम्मेदार नहीं होगा

A1 और A2 गोली के वितरक: मुंबई से कूरियर सेवा द्वारा गोली भेजने वाली - **श्रीमती पिंकी** +91 99203 00604

आपके विस्तार में गोली देनेवाले: अहमदाबाद - मयूरी 9638210109 / जामनगर - हेतल - 77790 62780 / राजकोट - मयूर 9426974011 / पालिताना - सैफुद्दीन 9879425252 / उमरगांव - वलसाड अभिजय 9723531071 / गिरगाम - भरत 8369809076 / घाटकोपर- कृपा 9820563370 और अलका - 97692 83637 / दहिसर -अतुल 9821183854 / मुलुंड- विशाल 9324231309 / सांगली -स्मिता 9370015902 / कोल्हापुर - दीपा 9767996565 / बेंगलुरु - हेती 7829677799

यदि आप इस सहायता कार्य में शामिल होना चाहते हैं तो आपका नाम दर्ज करने **श्रीमती पिंकी** से संपर्क करें।

मैं जीवन कभी हार नही मानता और जीवन में ऐसी ऐसी खोज की जो विश्व की प्रथम है और हम संघवी परिवार ने प्रिंटिंग में भी कई देश - विदेश के अवार्ड प्राप्त किए है। कृषि में हम **'सावे और संघवी'** मिलकर बिना लागत केवल एक बार **'पावर पॉइंट'** से सिस्टम दिखाकर देश को **'कृषिप्रधान'** बनाने, किसान की आत्महत्या रोकने और अन्न - पानी की मुसीबत से छुटकारा पाने का मार्ग दिखाते है, जो आपने पढ़ी। विश्व के लोगों को सभी प्रकार की बीमारी में 15 दिन राहत दिलाने **'प्राकृतिक क्षार की 2 गोली'** मैंने तैयार की, जिसे मानव सेवा हो सके और वह बातें भी आपने पढ़ी।

जीवन बसर करने और 'देश की हो रही लूट रोकने', बैंक के कई सॉफ्टवेयर तैयार किए है और जो लेन - देन के काम 'आधुनिक सिस्टम' में हर दिन Rs.500/- में नही कर पाते वही केवल 5 मिनट में और केवल Rs.50/- के खर्च में 1,000 अधिक शाखा कर रही है यह ठोस सबूत दिए मगर 'हम भारतीय लोगों को एक - दूजे पर विश्वास नहीं इसलिए देश में से संपूर्ण सपोर्ट नहीं मिलता और अन्य कारण आप जानते हैं।'